अवध की आवाज

www.avadhkaawaz.com

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार पत्र राजधानी लखनऊ उत्तर प्रदेश से प्रकाशित

वर्ष–10 अंक–257 R.N.I.- UPHIN/2012/45127 लखनऊ गुरुवार 16 दिसम्बर 2021 पृष्ठ – 8 मूल्य–3 रूपया

संक्षिप्त समाचार

अवध की आवाज ब्यूरो

उन्नाव। पत्रकार सुरक्षा महासमिति के प्रदेश उपाध्यक्ष गुड्डू मिश्रा पहुंचे औरास थाने के अंतर्गत पहुंचकर सर्वप्रथम पत्रकारों से मुलाकात की जिसमें विशेष रुप से विजय कुमार राष्ट्रीय स्वरूप संवाददाता औरास नितिन मिश्रा आज संवाददाता और प्रकाश मिश्रा हिंदुस्तान अखबार औरास से मुलाकात करते हुए शिष्टाचार भेंट किया प्रदेश उपाध्यक्ष गुड्डू मिश्रा अवध की आवाज के ब्यूरो चीफ साथ में संवाददाता योगेश द्विवेदी अवध की आवाज से मौजूद रहे शिष्टाचार भेंट के तत्पश्चात सभी पत्रकार भाइयों ने औरास ऐसो से पुष्पगुच्छ भेंट करते हुए मुलाकात की मुलाकात के बाद औरास क्षेत्र में अपराध के विषय में चर्चा की उनकी तरफ से आश्वासन दिया गया। अपराध नहीं होने दिया जाएगा कहीं पर भी किसी को कोई परेशानी हो हमें तुरंत अवगत कराएं हमारी पुलिस व हम हर समय क्षेत्र की सेवा के लिए तत्पर खड़े मिलेंगे।

यूपी बीजेपी नेता ने लोगों से मुफ्त अनाज के बदले वोट देने को कहा

आगरा, (वेब वार्ता)। पूर्व मंत्री और भाजपा नेता राजा अरिदमन सिंह आगरा में राशन कार्ड लाभार्थियों से मुफ्त अनाज के बदले लोगों से योगी जी को वोट देनेका अनुरोध करते नजर आए। उनका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है। वीडियो उस समय शूट किया गया था, जब भाजपा नेता यूपी सरकार के राज्यव्यापी मुफ्त राशन वितरण अभियान के शुभारंभ पर राशन कार्ड धारकों से बात कर रहे थे। वीडियो में सिंह कथित तौर पर कहते दिख रहे हैं कि अगर गरीबों को सरकारी योजनाओं का लाभ मिल रहा है, तो उनका वोट भी सरकार को जाना चाहिए। यह योजना किसी विशेष जाति के लिए नहीं है। उन्हें महिलाओं से यह कहते हुए भी सुना जाता है कि वे अपने परिजनों को भाजपा को वोट देने के लिए कहें। अरिदमन सिंह की पत्नी पक्षालिका सिंह भाजपा की मौजूदा विधायक हैं। संपर्क करने पर सिंह ने अपने बयान का बचाव करते हुए कहा कि अगर सरकार गरीबों को मुफ्त राशन दे रही है, तो उन्हें अपना वोट सरकार को देना चाहिए। उन्होंने कहा कि उन्होंने लोगों को योजना के बारे में जागरूक करने के लिए नमक और दाल के पैकेट पर छपे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तस्वीरें भी दिखाईं। कांग्रेस प्रवक्ता सुरेंद्र राजपूत ने कहा कि वीडियो इस बात का सबूत है कि सत्ताधारी भाजपा किस तरह से वोट खरीदने के लिए सरकारी पैसे का इस्तेमाल कर रही है। उन्होंने कहा कि वो वोट पाने के लिए मुफ्त में मतदाताओं को लुभा रहा है। चुनाव आयोग को इस मामले को देखना चाहिए। उन्होंने कहा कि अगर भाजपा सरकार को वास्तव में लोगों के कल्याण की चिंता है तो उसे युवाओं को रोजगार देना चाहिए, महंगाई पर नियंत्रण करना चाहिए और पेट्रोल–डीजल के दाम कम करने चाहिए। देश में कोविड की दूसरी लहर आने के बाद पीएम गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत अप्रैल से नवंबर 2021 तक गरीबों को मुफ्त राशन वितरित किया गया। इस योजना को अब अगले साल मार्च तक बढ़ा दिया गया है। इस योजना के तहत यूपी में 15 करोड़ से अधिक राशन कार्ड धारकों को लाभ मिलेगा।

मुख्यमंत्री योगी 19 दिसंबर को दिखा सकते हैं हरी झंडी, 15 बसें पहुंचीं गोरखपुर

अवध की आवाज ब्यूरो

गोरखपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ 19 दिसंबर को शहर के लिए आई इलेक्ट्रिक बसों को हरी झंडी दिखा सकते हैं। 15 बसें गोरखपुर पहुंच चुकी हैं। 10 और

बसें जल्दी ही आ जाएंगी। प्रदेश सरकार ने शहर में 25 इलेक्ट्रिक बसें चलाने की संस्तुति दी है। नगर निगम परिसर से गोरखनाथ मंदिर तक ई–बसों का सफल ट्रायल रन किया जा चुका है। इस बीच नगर निगम प्रशासन ने बसों के अंदर डस्टबिन रखने का निर्णय लिया है। वहीं, बसों को संचालित करने वाली कंपनी पीएमआई ने बसों के संचालन की तैयारी पूरी कर ली है। नगर आयुक्त अविनाश सिंह का कहना है कि पूरी उम्मीद है कि 19 दिसंबर से शहर में इलेक्ट्रिक बसें चलनी शुरू हो जाएंगी। मुख्यमंत्री बसों को हरी झंडी दिखाएंगे।

17 को तय होगी सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट प्लांट की कंपनी

सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट प्लांट की कंपनी 17 दिसंबर को तय हो जाएगी। इसे शासन स्तर से फाइनल किया जाना है। टेंडर जारी हो चुका है। 17 दिसंबर को टेंडर खुलने के बाद कंपनी फाइनल हो जाएगी। सीएंडडीएस के अवर अभियंता ओपी सिंह ने बताया कि पहले 13 दिसंबर को टेंडर खुलना था, लेकिन इसे 17 दिसंबर तक के लिए बढ़ा दिया गया है।

लखीमपुर खीरी कांड पर लोक सभा में हंगामा, सदन की कार्यवाही २ बजे तक के लिए स्थगित

नई दिल्ली, (वेब वार्ता)। बुधवार को विरोधी दलों के हंगामे की वजह से लोक सभा में प्रश्नकाल सुचारू रूप से नहीं चल पाया। विरोधी दलों के हंगामे और लगातार नारेबाजी के बीच लोक सभा स्पीकर ओम बिरला ने लगातार प्रश्नकाल को चलाने की कोशिश की, लेकिन विरोधी दलों का हंगामा लगातार जारी रहा। हंगामे और नारेबाजी की वजह से सदन की कार्यवाही बाधित होने पर लोक सभा अध्यक्ष ओम बिरला ने सदन की कार्यवाही को दोपहर 2 बजे तक के लिए स्थगित कर दिया। बुधवार को सदन की कार्यवाही शुरू होते ही कांग्रेस समेत अन्य कई विरोधी दलों के नेताओं ने लखीमपुर खीरी कांड पर एसआईटी रिपोर्ट और गृह राज्य मंत्री अजय मिश्रा टेनी के इस्तीफे को लेकर दिए गए स्थगन प्रस्ताव के नोटिस पर चर्चा की मांग को लेकर हंगामा करना शुरू कर दिया। विरोधी दलों के सांसद इस मुद्दे को लेकर लगातार नारेबाजी भी कर रहे थे। इसे देखते हुए लोक सभा स्पीकर ने लोक सभा की कार्यवाही को दोपहर 2 बजे तक के लिए स्थगित कर दिया।

यूपी में विधानसभा सत्र शुरू, विपक्षी दलों ने महंगाई, कानून-व्यवस्था पर जताया अपना विरोध

लखनऊ, (वेब वार्ता)। यूपी विधानमंडल का शीतकालीन सत्र बुधवार से शुरू हो गया है। तीन दिन तक चलने वाले इस सत्र के पहले दिन ही समाजवादी पार्टी और कांग्रेस के सदस्यों ने महंगाई, कानून–व्यवस्था और शिक्षक भर्ती के मुद्दों पर सदन के बाहर अपना विरोध दर्ज कराया है।

सदन के पहले दिन समाजवादी पार्टी के विधायको ने सदन के बाहर महंगाई, गन्ना मूल्यों का भुगतान, और शिक्षक भर्ती जैसे तमाम मुद्दों को लेकर प्रदर्शन किया। इस दौरान सभी विधायकों ने लाल टोपी के साथ हर मुद्दों की तख्ती ले रखी थी। फिर चौधरी चरण सिंह मूर्ति के सामने सभी ने बैठ कर अपना विरोध दर्ज कराया।

कांग्रेस सदस्यों ने केंद्रीय गृह राज्य मंत्री अजय मिश्रा टेनी के बेटे से जुड़े मामले को लेकर गांधी प्रतिमा पर बैठकर अपना विरोध जताया। इस दौरान कांग्रेस अध्यक्ष अजय कुमार लल्लू, विधायक आराधना मोना मिश्रा और एमएलसी दीपक सिंह ने विरोध मार्च भी निकाला।

विधानमंडल का शीतकालीन सत्र सत्रहवीं विधानसभा का आखिरी और इस साल आहूत चौथा सत्र है। सत्र के पहले दिन बुधवार को विधानसभा की कार्यवाही सदन के पूर्व अध्यक्ष सुखदेव राजभर और देश के पहले चीफ आफ डिफेंस स्टाफ जनरल बिपिन रावत व 11 अन्य सैन्य अफसरों–कर्मियों को श्रद्धांजलि दी गई। वहीं 16 दिसंबर को वर्तमान वित्तीय वर्ष का दूसरा अनुपूरक बजट, अगले वित्तीय वर्ष का अंतरिम बजट और 2022–23 के शुरूआती चार महीनों के लिए लेखानुदान प्रस्तुत किया जाएगा। 16 दिसंबर को 2021–22 के दूसरे अनुपूरक बजट, वित्तीय वर्ष 2022–23 के अंतरिम बजट और पहले चार महीनों के लिए लेखानुदान प्रस्तुत किया जाएगा। सदन में बजट पेश होने के बाद प्रश्न लिए जाएंगे। इसके बाद सदन के एजेंडा के अनुसार कार्यवाही होगी। इसी दिन विधान सभा के सभी सदस्यों का ग्रुप फोटो होगा। 17 दिसंबर को सदन में दूसरे अनुपूरक बजट पर चर्चा कर उसे पारित किया जाएगा।

तीन दिन के इस संक्षिप्त सत्र में जरूरी काम निपटाए जाएंगे। इसके साथ ही मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ कुछ अहम घोषणाएं भी सदन में कर सकते हैं। विधानसभा अध्यक्ष हृदय नारायण दीक्षित ने बताया कि 16 दिसंबर को द्वितीय अनुपूरक अनुदानों की मांगों एवं वित्तीय वर्ष 2022–23 का आय–व्ययक (अन्तरिम) तथा उसके एक भाग के लिए लेखानुदान को सदन में प्रस्तुत किया जाएगा। सीएजी रिपोर्ट भी रखी जा सकती है। 17 दिसम्बर अनुपूरक बजट पास कराया जाएगा।

रा.क्रा.स.पा. का उद्देश्य भाजपा को फिर मिले प्रचंड बहुमत - गोपाल राय

अवध की आवाज ब्यूरो

लखनऊ। राष्ट्रीय क्रांतिकारी समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं राजनीतिक विकल्प महासंघ के संयोजक गोपाल राय ने बुधवार को लखनऊ स्तिथ पार्टी कार्यालय में कार्यकर्ताओं को संबोधित करते कहा कि देश में यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एक तरफ जहां विकास हो रहा है। वहीं धारा 370 तीन तलाक नागरिक संशोधन बिल लागू होने के पश्चात वास्तव में देश विकास की ओर बढ़ रहा है जहां सर्व समाज के लोग सुरक्षित महसूस कर रहे हैं। राष्ट्रीय क्रांतिकारी समाजवादी पार्टी का उद्देश भाजपा को प्रचंड बहुमत से जिताना है उन्होंने कहा कि योगी सरकार

को प्रचंड बहुमत दिलाने हेतु 3 नवंबर को लखनऊ से निकली प्रदेश व्यापी जनक्रांति यात्रा के माध्यम से योगी जी को सत्ता में प्रचंड बहुमत से वापसी कराने हेतु हम सभी संकल्पित हैं योगीराज में प्रदेश भय भूख अपराध और भ्रष्टाचार से मुक्त हो रहा है। उत्तर प्रदेश में विकास तेजी से हुआ है और योगी सरकार 1 साल के शासन काल में जिस तरह विकास हुआ है। वही अपराध व भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने में सरकार कर्म चाहिए जो वाकई काबिले तारीफ है श्री राय ने कहा कि जन क्रांति ऐतिहासिक यात्रा साबित होगी जिसके द्वारा योगी जी के प्रदेश में किए गए। कार्यों और योजनाओं को जन–जन तक पहुंचाया जाएगा वह प्रदेश के सभी जाति व धर्म के बीच पहुंचकर सरकार द्वारा किए गए कार्यो के आधार पर उत्तर प्रदेश मैं भाजपा को प्रचंड बहुमत दिलाने की जन–जन से अपील की जाएगी ज्ञातव्य हो कि पूर्व की सरकारों में अपराध के पैमाने बहुत उच्च स्तर पर थे योगी सरकार के आगमन के पश्चात प्रदेश के सभी जनता अपने आप को स्वस्थ व प्रसन्न चित्त समझ रही है। ऐसी स्थिति में प्रदेशवासियों को मिलकर राष्ट्रवादी विचारधारा की पार्टी भाजपा को मिलकर भारी से भारी मतों से जीता कर फिर प्रचंड बहुमत से सरकार बनाने में राष्ट्रीय क्रांतिकारी समाजवादी पार्टी एवं राजनीतिक विकल्प महासंघ मिलकर मजबूती प्रदान करेगी।

मिनिस्टीरियल एसोसिएशन, कार्यालय प्रमुख अभियंता क्षेत्रीय कार्यालय लोक निर्माण विभाग,उ0प्र0

विभागाध्यक्ष ने दिलाई मिनिस्टीरियल एसोसिएशन पदाधिकारियों को शपथ

हम सबके लिए सरकार की प्राथमिकता सर्वोपरि: विभागाध्यक्ष

अवध की आवाज ब्यूरो

लखनऊ। मिनिस्टीरियल एसोसिएशन, कार्यालय प्रमुख अभियंता क्षेत्रीय कार्यालय लोक निर्माण विभाग के शपथ ग्रहण समारोह में मुख्य अतिथि प्रमुख अभियंता विकास एवं विभागाध्यक्ष ई. राकेश सक्सन ने कहा कि जो मंत्री अखण्ड प्रताप सिंह, संगठन मंत्री श्रीमती अर्चना सिंह,संयुक्त मंत्री रामहेत यादव, कमलेश कुमार, संयुक्त मंत्री श्रीमती शीला देवी, कोषाध्यक्ष विजय कुमार, सप्रेक्षक मनीष तिवारी, सांस्कृति मंत्री नितेश सिंह को शपथ दिलाई। शपथ ग्रहण समारोह के संगठन के साथ कंधा से कंधा मिलाकर काम करेंगा। शपथ ग्रहण समारोह में रामराज दुबे, भारत सिंह यादव, एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष माता यादव, शिवकुमार यादव, विजय कुमार बंधु राष्ट्रीय अध्यक्ष अटेवा, सुनील कुमार यादव, इं. एन.डी. द्विवेदी,

इं. मनोज कुमार गुप्ता प्रमुख अभियंता ग्रामीण सड़क और इं. वी.के.जैन मुख्य अभियंता मुख्यालय दो, निर्वाचन अधिकारी रेखा केशरवानी,पंकज श्रीवास्तव, अंशु श्रीवास्तव, सहित प्रदेश के कई अन्य संगठन के पदाधिकारी, विभागीय कर्मचारी उपस्थित रहे। शपथ ग्रहण समारोह का संचालन पूर्व महामंत्री रामलखन ने किया। भी पदाधिकारी निर्वाचित हुए है उन पर सदस्यों ने जिम्मेदारी सुनिश्चित की है। हमारे और आपके लिए सरकार की प्राथमिकता सर्वोपरि है। विभागाध्यक्ष स्तर पर हमारा आपके साथ समन्वय बना रहेगा। विश्वैश्रैया प्रेक्षागृह में विभागाध्यक्ष ने अध्यक्ष वीरेन्द्र कुमार, महामंत्री ओम प्रकाश, उपाध्यक्ष मो. अली मक्की, संगठन उपरान्त प्रदेश अध्यक्ष वीरेन्द्र कुमार ने कहा कि एसोसिएशन का प्रतिनिधि मण्डल नव सृजित छह क्षेत्रीय कार्यालयों का सृजन होने के उपरान्त उक्त कार्यालयों में पदों के सृजन और वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों के पदों के सृजन के सम्बंध में प्रत्यावेदन प्रस्तुत करेगा। एसोसिएशन पुरान पेंशन बहाली के लिए संघर्षरत

अयोध्या में 10 राज्यों के मुख्यमंत्रियों का एक साथ दर्शन करना एतिहासिक

अंबिका नन्द त्रिपाठी

अयोध्या। श्री राम जन्म भूमि मंदिर का भूमि पूजन होने के बाद से लगातार अयोध्या में पूरे देश के लोग दर्शन के लिए आ रहे हैं। इसी क्रम में अयोध्या धाम में भारतीय गणराज्य के लगभग 10 प्रान्तों के मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री एवं भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे पी नड्डा जी अयोध्या पहुंचे द्य यह पहला अवसर है कि एक साथ 10 प्रान्तों के मुख्यमंत्री अयोध्या दर्शन के लिए आए हैं। आए हुए सभी अतिथियों का स्वागत होटल पंचशील में ढोल नगाड़े के साथ फूल माला पहनाकर किया गया, जिसकी अगवानी अयोध्या संसद श्री लल्लू सिंह, विधायक श्री वेद प्रकाश गुप्ता, महापौर श्री ऋषिकेश उपाध्याय, मंत्री नील कंठ तिवारी शामिल रहे। सभी मुख्यमंत्री, उप मुख्यमंत्री, राज्य मंत्री, केंद्रीय मंत्री ने आज अयोध्या भ्रमण कर सर्वप्रथम सभी ने सरयू आरती में भाग लिया। उनके साथ उनके परिवार के सदस्य भी उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे0पी0 नड्डा जी सबसे पहले सरयू आरती स्थल पर पहुंचे तथा सरयू मां की आरती में पूरे परिवार के साथ लिया। अन्य भाग लेने वाले मुख्यमंत्रियों में मध्य प्रदेश के श्री शिवराज सिंह चौहान एवं उनकी धर्मपत्नी, त्रिपुरा के बिप्लव देव एवं उनकी धर्मपत्नी, गोवा के श्री प्रमोद सावंत उनकी धर्मपत्नी, हरियाणा के श्री मनोहर लाल खट्टर, असम के श्री हेमंत विश्वा शर्मा एवं उनकी धर्मपत्नी, गुजरात के श्री भूपेन्द्र भाई पटेल एवं उनकी धर्मपत्नी, अरूणांचल प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री प्रेमा खांडू एवं उनकी धर्मपत्नी, मणिपुर के मुख्यमंत्री श्री एन0 विशेन सिंह एवं उनकी धर्मपत्नी, अरूणांचल के उपमुख्यमंत्री श्री चोनामीन एवं उनकी धर्मपत्नी, बिहार के उपमुख्यमंत्री श्री तारकिशोर प्रसाद एवं उनकी धर्मपत्नी तथा बिहार की उपमुख्यमंत्री सुश्री रेनू देवी, गोवा के उपमुख्यमंत्री श्री चन्द्रकांत कावेलकर, नागालैंड के उपमुख्यमंत्री श्री यथंगों पट्टन के अलावा राज्यसभा सांसद विनय शास्त्र बुद्दे एवं उनके साथ उनके सदस्यों आदि ने भाग लिया तथा श्रद्वा के साथ पूजन आरती किया। इस कार्यक्रम में प्रदेश के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री तथा जनपद के प्रभारी मंत्री डा0 नीलकंठ तिवारी ने सभी की आगवानी की तथा राज्य सरकार के तरफ से सभी का स्वागत किया। तत्पश्चात मा0 मुख्यमंत्रीद्व

विशिष्ट अतिथियों द्वारा श्री हनुमानगढ़ी का दर्शन एवं पूजन किया गया। तत्पश्चात सभी लोगों ने श्रीराम लला मंदिर में दर्शन पूजन किया। मुख्य पूजन श्रीराम जन्मभूमि के मुख्य पुजारी श्री सत्येन्द्र दास एवं उनकी टीम द्वारा कराया गया तथा सरयू आरती श्री शशिकांत दास एवं उनकी टीम द्वारा कराया गया। रामजन्मभूमि के निर्माण में कार्य कर रहे संस्था के प्रतिनिधियों एवं कर्मचारियों की भी सराहना की गयी। रामलला मंदिर के परिसर में स्थापित मंदिर निर्माण के कार्यो की जानकारी ली तथा वहां प्रस्तुतिकरण किया गया। प्रस्तुतिकरण एलएण्डटी के प्रमुख इस परियोजना के श्री विनोद मेहता द्वारा प्रस्तुत किया गया। उन्होंने बताया कि जो निर्माण कार्य चल रहा है उस पर भव्य श्रीरामलला मंदिर का निर्माण हो रहा है तथा जो ध्वज लगा है उस पर भगवान रामलला का जन्मस्थान है। वहां पर मा0 प्रधानमंत्री जी द्वारा 5 अगस्त 2020 को भूमिपूजन किया गया था। प्रस्तुतिकरण में उन्होंने यह भी बताया कि मंदिर तीन तलों का बनेगा, जिसकी लम्बाई 388 फिट, चौड़ाई 250 फिट और ऊंचाई 161 फिट आदि होगी। मंदिर का निर्माणद्व डिजाइन 1000 अवधि मानकर किया जा रहा है। मंदिर के निर्माण में लोहे का प्रयोग नही किया जा रहा है इसमें तांबे का प्रयोग किया जा रहा है और इसकी भराई एक विशेष बिल्डिंग मैटेरियल से की जाती है। करीब इसमें 26000 ग्रेनाइट के ब्लाक लगाये जायेंगे। इसके अलावा इसमें राजस्थानी विशेष पत्थरों का इस्तेमाल किया जायेगा। मंदिर का निर्माण रात दिन चल रहा है इसको वर्ष 2023 अन्त तक पूरा होने की संभावना है। इस कार्यक्रम का संचालन विश्व हिन्दू परिषद के अन्तर्राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं राजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के महामंत्री चम्पत राय जी द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में ट्रस्ट के ट्रस्टी दिनेन्द्र दास, विमलेन्द्र मोहन प्रताप मिश्र, अनिल मिश्र अन्य गणमान्य व्यक्ति के अलावा राजेन्द्र सिंह पंकज, जगन्नाथ जी, विश्व हिन्दू परिषद एवं ट्रस्ट के अनेक वरिष्ठ सहयोगीगण, सांसद लल्लू सिंह, विद्वायक वेद प्रकाश गुप्त, श्रीमती शोभा सिंह चौहान, बाबा गोरखनाथ, श्री रामचन्दर यादव, जिला पंचायत सदस्य के प्रतिनिधि आलोक सिंह, मेयर ऋषिकेश उपाध्याय सहित जिलाध्यक्ष संजीव सिंह, महानगर अध्यक्ष श्री अभिषेक मिश्र आदि उपस्थित थे। सभी मुख्यमंत्री एवं उपमुख्यमंत्रियों द्वारा राज्य सरकार के विशेष विमान से अयोध्या हवाई पट्टी पर आगमन हुआ वहां पर अपर पुलिस महानिदेशक श्री एस0एन0 सावंत, मण्डलायुक्त श्री एम0पी0 अग्रवाल, पुलिस महानिरीक्षक श्री के0पी0 सिंह, जिलाधिकारी श्री नितीश कुमार, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्री शैलेश कुमार पांडेय, नगर आयुक्त श्री विशाल सिंह सहित जनपद के अनेक वरिष्ठ अधिकारियों एवं गणमान्य व्यक्तियों द्वारा हवाई पट्टी पर स्वागत किया गया तथा सभी का कार्यक्रम समाप्ति पर लंच पंचशील होटल में दिया गया। सभी कार्यक्रम स्थलों पर हमारे वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशन में सफल कार्यक्रम हुआ तथा सभी मुख्यमंत्रियों तथा उपमुख्यमंत्रियों ने भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे0पी0 नड्डा जी के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश शासन, मण्डल प्रशासन, जिला प्रशासन एवं श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के सम्मानित सदस्यों तथा भारतीय जनता पार्टी एवं विश्व हिन्दू परिषद एवं संघ परिवार के सदस्यों के प्रति स्वागत के लिए आभार व्यक्त किया तथा रामजन्मभूमि के प्रस्तुतिकरण एवं सरयू आरती स्थल के कार्यक्रमों की भाव विभोर होकर सराहना की। अपर पुलिस महानिदेशक श्री एस0एन0 सावंत, मण्डलायुक्त श्री एम0पी0 अग्रवाल, पुलिस महानिरीक्षक के0 पी0 सिंह, जिलाधिकारी नितीश कुमार, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक शैलेश कुमार पांडेय, नगर आयुक्त विशाल सिंह, उपनिदेशक सूचना डा0 मुरली धर सिंह एवं मण्डल एवं जनपद के सभी अधिकारियों ने मीडिया के विशेष सहयोग और आम जनमानस के सहयोग के लिए सराहना की। इस कार्य में लगाये गये मजिस्टेटो, पुलिस अधिकारियों, सरकारी कर्मचारियों, गैर सरकारी कर्मचारियों के भी कार्यो की सराहना की और धन्यवाद ज्ञापित किया।

सम्पादकीय

मानवता व भाईचारे की मिसाल भी पेश कर गया ऐतिहासिक किसान आंदोलन

केंद्र सरकार द्वारा किसानों पर थोपे जा रहे तीन काले कृषि कानूनों को आखिरकार सरकार को वापस लेना ही पड़ा। इसके कानूनी दांव पेंच व किसानों को इससे होने वाले नफा नुकसान के अलावा इस पूरे आंदोलन को देश विदेश में कई अलग अलग नजरिये से भी देखा गया। इस आंदोलन में जहाँ राष्ट्रीय स्तर पर किसानों की जबरदस्त एकजुटता सामने आई वहीँ इसमें उनका त्याग, तपस्या, समर्पण, जुझारूपन, सूझ बूझ, सहनशीलता, प्रेम, बलिदान, मानवता आदि सब कुछ साफ नजर आया। निश्चित रूप से सरकार द्वारा तीनों विवादित कृषि कानूनों के वापस लेने तथा इसके बाद किसान आंदोलन के समाप्त होने की घोषणा से देश ने राहत की सांस ली है। परन्तु एक वर्ष तक लगातार एक ही स्थान पर बने रहने वाले आंदोलनकारी किसानों के वापस चले जाने से आंदोलन स्थलों के आस पास के उन गरीबों, मजदूरों व झुग्गी झोपड़ी में रहने वालों के लिये आंदोलन की समाप्ति और उनकी घर वापसी, मायूसी व उदासी का पैगाम लेकर आई।

दिल्ली के चारों ओर जिन जिन सीमाओं पर आंदोलनकारी किसान धरना प्रदर्शन कर रहे थे उन सभी सीमाओं पर कई कई जगह लंगर व 'गुरु का लंगर' संचालित किया जा रहा था। 'अन्नदाताओं ' ने यह लंगर केवल आंदोलनकारी किसानों के लिये नहीं बल्कि हर खास–ो–आम के लिये लगाये थे। देश दुनिया को शुद्ध खाद्य सामग्री उपलब्ध कराने वाला 'अन्नदाता ' यहाँ भी शुद्ध देसी घी के लंगर चला रहा था। दिल्ली के अनेक गुरुद्वारों ने किसानों को लंगर सेवायें उपलब्ध कराई हुई थीं। तीनों वक्त की शुद्ध व ताजी रोटी, पराठों व दाल सब्जी के अतिरिक्त किसानों के लंगर में ड्राई फ्रूट, फल, दूध, दही लस्सी, मिठाई आदि सब कुछ उपलब्ध था । ऐसे में आंदोलन स्थल के वे लाखों पड़ोसी, गरीब व मजदूर जिन्होंने पूरे एक वर्ष तक सपरिवार किसानों के लंगर का भोजन व नाश्ता किया तथा अन्य पकवान खाये, उनके लिये इस आंदोलन का समाप्त होना कुछ ऐसा ही रहा जैसे उनके सामने से लंगर व पकवान की थाली खींच ली गयी हो। आंदोलन स्थल के निकटवर्ती लोगों का आंदोलनकारियों के साथ एक भावनात्मक व सहयोगपूर्ण रिश्ता कायम हो गया था जोकि इस आंदोलन की समाप्ति के साथ ही केवल यादों व स्मृतियों में शेष रह गया। ऐसे सैकड़ों लोग आंदोलनकारी किसानों की घर वापसी के समय अश्कबार आँखों व मायूस चेहरों के साथ घर वापसी करने वाले किसानों का सहयोग करते दिखाई दिये।

किसान आंदोलन ने केवल मनुष्यों मात्र नहीं बल्कि लावारिस पशुओं के प्रति भी ऐसी मानवता दिखाई कि पशु भी किसानों के मोह से अछूते नहीं रहे। सिंघू बॉर्डर पर आंदोलन की शुरुआत में एक कुतिया ने कुछ बच्चे जन्मे थे। इनमें से एक बच्चा किसानों का लाडला बन गया। आंदोलन समाप्ति के समय वह बच्चा लगभग एक वर्ष का हो चुका था। जब उसने देखा कि ट्रैक्टर ट्रॉली पर सामान लाद किसान वापस जाने की तैयारी में लगे हैं तो वह कुत्ता भी किसी तरह कूद फांद कर ट्रॉली में सवार हो गया। और 'अन्नदाता ' उस कुत्ते को भी आंदोलन स्थल की निशानी के रूप में ट्रैक्टर ट्रॉली में बिठा कर अपने साथ पंजाब ले आये।

राष्ट्रीय स्तर पर किसानों की एकजुटता के लिये तो यह आंदोलन मिसाल बना ही साथ साथ पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तरांचल व उत्तर प्रदेश के किसानों की एकजुटता का भी कारक बना। 2014 के बाद एक बड़ी साजिश के तहत जिस पश्चिमी उत्तर प्रदेश को सांप्रदायिकता की आग में झोंक कर राजनीति के शातिरों द्वारा भरपूर राजनैतिक लाभ उठाया गया था इस आंदोलन ने काफी हद तक नफरत की इस खाई को पाटने की कोशिश की है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसानों को बखूबी समझ आ गया कि हिन्दू मुस्लिम व ऊंच नीच के वर्गों में बांटकर सत्ता द्वारा 'बांटो और राज करो ' की अंग्रेजी नीति का अनुसरण किया जा रहा है। जबकि सभी किसानों की मांगें भी एक हैं मुद्दे भी एक। जाहिर है यह अन्नदाताओं की एकजुटता ही थी जिसके चलते पूजा–पाठ, अरदास, रोजा–नमाज, इफ्तार आदि सब कुछ एक ही पिण्डाल व एक ही छत के नीचे अदा होते देखे गये।

हरियाणा पंजाब के किसानों की एकजुटता के भी तमाम किस्से आंदोलन की समाप्ति के बाद सुनाई दे रहे हैं। जब एक भाजपा विधायक के उपद्रव से आहत होकर जनता के सामने राकेश टिकैत की आँखों से आंसू बहे थे उस रात हरियाणा के लाखों किसानों ने जबरदस्त सर्दी, ठिठुरन व धुंध के बावजूद टिकैत के आंसुओं के जवाब में रातों रात हरियाणा के विभिन्न इलाकों से दिल्ली की ओर मार्च किया था। और इसी घटना से किसान आंदोलन को ऐसा प्रोत्साहन मिला कि आखिरकार आन्दोलन की परिणिति किसानों की फतेह के रूप में सामने आई। पंजाब के किसान नेता जोगिन्दर सिंह उगराहां का हरियाणा के किसानों के सहयोग व भाई चारे को दर्शाने वाला बयान खूब वायरल हुआ। किसान आंदोलन की दिल्ली की सीमाओं पर गुजारी गयी पहली रात को याद करते हुए उगराहां ने कहा कि–'आंदोलन स्थल पर पहली रात किसानों ने बिना दूध की चाय पी थी। परन्तु सुबह हरियाणा के किसानों ने इतना दूध भेज दिया कि दूध रखने के लिये बर्तन ही नहीं बचे। ऐसे में पंजाब व हरियाणा के किसानों के साथ को कभी भूला नहीं जा सकता।'

कई ऐसी बातें भी हुईं जो इस पूरे शांतिपूर्ण आंदोलन के लिये बदनामी का सबब बनीं। जैसे 26 जनवरी को किसानों के एक वर्ग व उसमें कुछ शरारती तत्वों का लाल किले पर हुड़दंग मचाना, निहंग द्वारा किसी सेवादार का हाथ काट देना आदि इसतरह के और भी कई नकारात्मक समाचार आए। इनमें कई दुर्भाग्यपूर्ण थे तो कुछ दुर्भावनापूर्ण साजिश का हिस्सा। परन्तु सत्ता की सभी शतरंजी चालों का जवाब देश के किसानों ने अत्यंत धैर्य व संयम के साथ दिया। जिसमें आखिरकार किसानों की फतेह हुई और अहंकारी सत्ता की बेशर्मी भरी हार। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि देश द्रोही, देश विरोधी, खालिस्तानी, नक्सल व आन्दोलनजीवी जैसे न जाने कितने आरोपों का मुंहतोड़ जवाब देते हुए यह ऐतिहासिक किसान आंदोलन मानवता व भाईचारे की भी एक जबरदस्त मिसाल भी पेश कर गया।

ऊर्जा संरक्षण के प्रति जागरूकता की दरकार

–योगेश कुमार गोयल–

प्रतिवर्ष 14 दिसम्बर को ऊर्जा के अपव्यय को कम करने, ऊर्जा बचाने और इसके संरक्षण के महत्व के बारे में लोगों को जागरूक करने के लिए देश में राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस मनाया जाता है।

यह दिवस प्रतिवर्ष एक खास विषय के साथ कुछ लक्ष्यों तथा उद्देश्यों को मद्देनजर रखते हुए लोगों के बीच इन्हें अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए मनाया जाता है। ऊर्जा दक्षता ब्यूरो द्वारा वर्ष 2001 में देश में ऊर्जा संरक्षण अधिनियम लागू किया गया था।

दरअसल दुनिया भर में पिछले कुछ दशकों में जनसंख्या तेजी से बढ़ी है और उसी के अनुरूप ऊर्जा की खपत भी निरंतर बढ़ रही है लेकिन दूसरी ओर जिस तेजी से ऊर्जा की मांग बढ़ रही है, उससे भविष्य में परंपरागत ऊर्जा संसाधनों के नष्ट होने की आशंका बढ़ने लगी है। अगर ऐसा होता है तो मानव सभ्यता के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिन्ह लग जाएगा। यही कारण है कि भविष्य में उपयोग हेतु ऊर्जा के स्रोतों को बचाने के लिए विश्वभर में ऊर्जा संरक्षण की ओर विशेष ध्यान देते हुए इसके प्रतिस्थापन के लिए अन्य संसाधनों को विकसित करने की जिम्मेदारी बढ़ गई है।

ऊर्जा की न्यूनतम मात्रा का उपयोग करने और इसके अनावश्यक उपयोग से बचने को ही 'ऊर्जा संरक्षण' कहा जाता है। ऊर्जा संरक्षण का सही अर्थ ऊर्जा के अनावश्यक उपयोग से बचते हुए कम से कम ऊर्जा का उपयोग करना है। ऊर्जा दक्षता ब्यूरो का कहना है कि ऊर्जा संरक्षण योजना को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने व्यवहार में ऊर्जा संरक्षण को शामिल करना चाहिए।

विद्युत मंत्रालय द्वारा देश में ऊर्जा संरक्षण की प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने के लिए शुरू किया गया 'राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण अभियान' एक राष्ट्रीय जागरूकता अभियान है। देश में ऊर्जा संरक्षण तथा कुशलता को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 1977 में केन्द्र सरकार द्वारा पेट्रोलियम संरक्षण अनुसंधान एसोसिएशन का गठन किया गया था। ऊर्जा दक्षता और ऊर्जा संरक्षण के महत्व के बारे में आम जनता में जागरूकता बढ़ाने के लिए वर्ष 2001 में एक अन्य संगठन 'ऊर्जा दक्षता ब्यूरो' (ब्यूरो ऑफ एनर्जी एफिशिएंसी) भी स्थापित किया गया। ब्यूरो का कहना है कि प्रत्येक व्यक्ति छोटे–छोटे कदम उठाकर अपने घर अथवा कार्यालय में लाईट, पंखे, हीटर, कूलर, एसी तथा बिजली के अन्य किसी भी उपकरण के अनावश्यक उपयोग पर नियंत्रण करते हुए ऊर्जा की बचत कर सकता है।

ऊर्जा संरक्षण के लिए कदम उठाकर भी प्रत्येक नागरिक देश के राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण अभियान में बहुत बड़ी मदद दे सकता है। अगर कुछ छोटे उपायों का उल्लेख किया जाए तो पुराने बल्बों के स्थान पर सीएफएल या एलईडी बल्बों का इस्तेमाल किया जाए। आई.एस.आई. चिन्हित विद्युत उपकरणों का ही उपयोग करें। यथासंभव दिन के समय सूर्य की रोशनी का अधिकतम उपयोग किया जाए और जरूरत न होने पर लाइटें, पंखे, कूलर, ए.सी., हीटर, गीजर इत्यादि विद्युत उपकरण बंद रखें। यथासंभव खाना पकाने के लिए बिजली के उपकरणों के बजाय सोलर कुकर और पानी गर्म करने के लिए बिजली के गीजर के बजाय सोलर वाटर हीटर के उपयोग को बढ़ावा दिया जाए। भवन निर्माण के समय प्लाट के चारों ओर वृक्ष लगाए जाएं तो प्रचंड गर्मी में भी भवन गर्म होने से बचेंगे और कूलर, एसी इत्यादि की जरूरत कम होगी। मकानों या कार्यालयों में दीवारों पर हल्के रंगों के प्रयोग से कम रोशनी वाले बल्बों से भी कमरे में पर्याप्त रोशनी हो सकती है। इससे न केवल ऊर्जा संरक्षण अभियान में सहभागी बनकर हम भविष्य के लिए ऊर्जा बचाने में मददगार बनेंगे बल्कि अपना बिजली बिल भी सीमित रख सकेंगे।

सार्वजनिक स्थानों पर सौर लाइटों की व्यवस्था होनी चाहिए। विशेषज्ञों के अनुसार कार्यस्थल पर दिन के समय प्राकृतिक रोशनी में कार्य करने वाले लोगों की कार्य क्षमता में वृद्धि होती है और ऊर्जा की खपत में अपेक्षित कमी आती है, वहीं तेज कृत्रिम रोशनी वाले स्थानों पर काम करने से कर्मियों में तनाव, सिरदर्द, रक्तचाप, थकान जैसी स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं देखी जाती हैं। इससे उनकी कार्य क्षमता पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसलिए ऑफिस में यदि पर्याप्त प्राकृतिक रोशनी का व्यवस्था हो तो इससे ऊर्जा संरक्षण होने के साथ–साथ कर्मचारियों की कार्यक्षमता भी बढ़ती है। प्रतिवर्ष देश में हजारों गैलन पानी बर्बाद होता है, इसलिए ऊर्जा संरक्षण की बात करते समय जल की बर्बादी को रोकने पर पर्याप्त ध्यान दिया जाना भी बेहद जरूरी है।

हालांकि दैनिक जीवन में उपयोग के लिए जीवाश्म ईंधन, कच्चे तेल, कोयला, प्राकृतिक गैस इत्यादि ऊर्जा स्रोतों द्वारा पर्याप्त ऊर्जा उत्पन्न की जा रही है लेकिन ऊर्जा की लगातार बढ़ती मांग को देखते हुए भविष्य में इन ऊर्जा संसाधनों की अत्यधिक कमी होने या इनके समाप्त होने का भय पैदा हो गया है। यही कारण है कि भारत सहित दुनियाभर में अब ऊर्जा के गैर–अक्षय संसाधनों के मुकाबले अक्षय ऊर्जा संसाधनों की मांग निरंतर तेजी से बढ़ रही है। भारत में भी अक्षय ऊर्जा उत्पादन क्षमता बढ़ाने पर जोर दिया जा रहा है और सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा इत्यादि का उत्पादन बढ़ाने के लिए बड़ी–बड़ी परियोजनाएं स्थापित की जा रही हैं।

अक्षय ऊर्जा असीमित और प्रदूषणरहित ऊर्जा है, जिसका नवीकरण होता रहता है। ऊर्जा संरक्षण की आदतों को अपनाने के साथ ही ऐसे अक्षय ऊर्जा संसाधनों की ओर कदम बढ़ाना आज समय की सबसे बड़ी मांग है। ग्लोबल वार्मिंग तथा जलवायु परिवर्तन से बचाव के दृष्टिगत भी अक्षय ऊर्जा संसाधनों को प्रोत्साहित किया जाना जरूरी है। न केवल भारत बल्कि पूरी दुनिया के समक्ष बिजली जैसी ऊर्जा की महत्वपूर्ण जरूरतें पूरी करने के लिए सीमित प्राकृतिक संसाधन हैं, साथ ही पर्यावरण असंतुलन और विस्थापन जैसी गंभीर चुनौतियां भी हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए अक्षय ऊर्जा ऐसा बेहतरीन विकल्प है, जो पर्यावरणीय समस्याओं से निपटने के साथ–साथ ऊर्जा की जरूरतों को पूरा करने में भी कारगर साबित होगा लेकिन ऊर्जा के संसाधन गैर–अक्षय हों या अक्षय, हमें अपने जीवन में ऊर्जा के महत्व को समझते हुए ऊर्जा संरक्षण के प्रति जागरूक होना ही होगा। देश के प्रत्येक नागरिक का दायित्व है कि ऊर्जा चाहे किसी भी रूप में हो, वह उसे व्यर्थ में नष्ट न करे। अपने और आने वाली पीढ़ियों के सुखद भविष्य के लिए हमें अपने व्यवहार में ऊर्जा संरक्षण की आदतों को शामिल करना ही होगा।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

सनातन धर्म और उसकी राह की चुनौतियां

–डॉ. हिमांशु शर्मा–

'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद दुख भाग्भवेत।।'

(यह शांति पाठ भारत वर्ष के सनातन धर्म का आधार है।)

हिंदू धर्म को सनातन धर्म से अभिहित किया जाता है क्योंकि इसका प्रारंभ मानव सभ्यता के विकास के साथ हुआ।

अति प्राचीन सभ्यताओं में सनातन धर्म के अस्तित्व के प्रमाण मौजूद हैं। सनातन धर्म की अनंत विशेषताओं ने विश्व को प्रभावित किया है। कई महापुरुषों ने अपने विचार और व्यक्तित्व से विश्व में अपना डंका बजाया। अद्भुत क्षमताओं और उज्ज्वल इतिहास का समागम सनातन धर्म में निहित है। जब संसार शिक्षा का अर्थ ठीक से समझ भी नहीं पाया, उस समय वेद वेदांग, उपनिषद, ब्राह्मण ग्रंथ, पुराण जैसे महान ग्रंथों का प्रणयन सनातन धर्म में हो चुका था। भगवद् गीता जैसा वैज्ञानिक और व्यावहारिक ग्रंथ विश्व भर में अपनी प्रतिष्ठा स्थापित कर चुका है।

ऐसे महान सनातन धर्म पर समय–समय पर अनेक विपदाएं आईं, परंतु स्वर्ण के समान निखरता अभ्युदय ही इसकी सबसे बड़ी विशेषता रही। वर्तमान में सनातन धर्म को षड्यंत्रपूर्वक कलंकित करने का कुत्सित सुनियोजित प्रयास किया जा रहा है।

गत 28 नवम्बर 2021 को राजस्थान के समाचार पत्रों में छपी खबर ने आत्मा पर गहरी चोट की। भदेसर क्षेत्र के अंतर्गत मण्डफिया थानांतर्गत भाटोली गुजरात गांव में एक दलित युवक की बिंदोली में कतिपय लोगों द्वारा अवरोध उत्पन्न किया गया। ऐसी शर्मनाक घटना सनातन धर्म को खंडित करने का प्रयास भर है। ऐसे कतिपय लोगों का पुरजोर विरोध होना चाहिए। हिंदू धर्म में जातिगत विद्वेष कभी नहीं था। सनातन धर्म के विरोधियों ने ऐसा प्रचारित किया कि समाज के उच्च वर्ग के लोग निम्न वर्ग पर अत्याचार करते रहे हैं। ब्राह्मण वर्ग को इसके लिए विशेष रूप से जिम्मेदार ठहराया जाता है। ऐसी घटनाएं केवल धर्म, दुर्भाचरण को खंडित और कमजोर करने का प्रयास हैं जो विदेशी अत्याचारी आक्रांताओं द्वारा इतिहास में हुए। उन्हें हमेशा से इसका भान था कि संगठित हिन्दू धर्म पर अधिकार नहीं रखा जा सकता है, इसलिए सनातन धर्म को जातिगत विद्वेष में उलझा दिया।

आज बाबा साहब अंबेडकर को कौन नहीं जानता। उन्हें दलितों का मसीहा माना जाता है। भारतवर्ष की जनता यह भी जानती है कि एक ब्राह्मण ने उन्हें अंबेडकर उपनाम दिया। बड़ौदा के महाराजा सायाजी राव गायकवाड़ ने अंबेडकर को तीन साल तक आर्थिक सहायता दी जिससे उन्होंने कोलंबिया विश्वविद्यालय में पढ़ाई पूरी की। अगर भेदभाव और घृणा का भाव इतना गहरा था तो एक ब्राह्मण ने प्रारंभिक अवस्था में कैसे भीमराव का साथ दिया। कुछ उद्दंडों के कृत्य को विराट हिंदू धर्म पर थोपना सही नहीं है। वर्तमान समय में आवश्यकता है धर्म को मजबूत बनाने की, जिम्मेदार संगठनों और सक्षम नेतृत्व को इस ओर ईमानदारी से कार्य करना चाहिए। हिंदू धर्म में जातिगत विद्वेष के लिए कोई स्थान नहीं है। ये कड़ी भी टूटी तो धर्म में बिखराव की स्थिति हमेशा बनी रहेगी। जाति से कई गुना बड़ा है धर्म, हमें इसे समझने की आवश्यकता है। किसी दलित पर अत्याचार होता है तो यह हमारे लिए शर्मनाक है।

शौचालय शब्द शौच और आलय इन दो शब्दों से बना है। शौच शब्द शुचि में अ प्रत्यय लगने से बना, शुचि का अर्थ है पवित्र और आलय का अर्थ स्थान है। मनुष्य अपना मल त्याग कर शरीर को पवित्र करता है इसलिए शौचालय शब्द से तात्पर्य पवित्र होने का स्थान। इसी प्रकार समाज के कई वर्ग समाज को पवित्र करने का काम करते हैं।

समाज को अपवित्र करने वालों से बड़ा मान–सम्मान उन जनों का होना चाहिए जिनमें इस समाज को पवित्र करने की शक्ति है जो अपने–आप में अद्भुत है। पूरा समाज वर्षों से इन देव पुरुषों का ऋणी है। सनातन धर्म को जागरूक होकर यह समझने की आवश्यकता है कि यदि आज यह बिखराव शांत न हुआ तो भविष्य में इसके धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक दुष्परिणाम देखने को मिलेंगे। हमें समाज के इन पवित्र जनों का आदर करना चाहिए। सनातन धर्म के प्रति सजग व संवेदनशील व्यक्तियों, संगठनों को इस बात को समझना होगा हिंदू धर्म में दलितों को उनका सम्मान यदि न लौटाया गया तो इसके विनाशकारी परिणाम देखने को मिलेंगे। बार–बार ऐसी घटनाएं सनातन धर्म को शर्मसार कर रही है। भदेसर क्षेत्र की घटना के अगले ही दिन 29 नवम्बर 2021 को मावली (उदयपुर) क्षेत्र के सालेरा खुर्द गांव में भी ऐसी ही घटना ने व्यथित कर दिया। हालांकि, इन घटनाओं में देश का कानून अपना काम कर रहा है, लेकिन ऐसी घटनाएं समाज पर कोढ़ढ हैं, इन्हें तुरंत निस्तारित करने की आवश्यकता है।

जागरूकता अभियान सामाजिक स्तर पर चलाया जाए, सामाजिक सम्मेलन किए जाएं और एक–दूसरे को सम्मान व स्नेह देने की परंपरा का विकास किया जाएगा तो ही सनातन धर्म सशक्त किया जा सकेगा। सामाजिक समरसता के लिए समर्पित रूप से कार्य कर रहे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ व ऐसे ही अन्य संगठनों को इस ओर ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

किसान आंदोलन तो खत्म हो गया अब कैसे नेतागिरी करेंगे राकेश टिकैत ?

–अजय कुमार–

नए कृषि कानून के खिलाफ किसान आंदोलन खत्म हो गया है। इस आंदोलन के माध्यम से राकेश टिकैत ने यह साबित कर दिया है कि वह भी अपने पिता चौधरी महेंद्र सिंह टिकैत की तरह बड़ा आंदोलन चलाने की काबिलियत रखते हैं। पिता महेंद्र सिंह टिकैत अपनी जिद्द के बल पर किसी भी सरकार को बैकफुट पर खड़ा कर दिया करते थे। नया कृषि कानून वापस हो गया है, इससे किसे फायदा होगा, किसको नुकसान, यह तो समय ही बताएगा, लेकिन इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि साल भर से अधिक समय तक चले आंदोलन में कई उतार–चढ़ाव देखने को मिले। आंदोलनकारियों में जहां सत्ता पक्ष के प्रति तल्खी दिखाई दी तो विपक्ष ने भी खूब सियासी रोटियां सेंकी। मोदी सरकार ने भी आंदोलन खत्म करने के लिए कई हथकंडे अपनाए। कई महीने तक तो किसान नेताओं और सरकार के बीच किसी तरह का कोई संवाद ही नहीं हुआ। आंदोलनकारियों पर आरोप लगा कि उन्हें विदेश से फंडिंग की जा रही है, खालिस्तान की मांग करते लोग भी यहां दिखाई दिए। 26 जनवरी को लाल किले पर जो हुआ उसे भी कोई याद रखना नहीं चाहेगा। वह घटना किसान आंदोलन पर एक बदनुमा दाग था। आंदोलन के विस्तार की बात की जाए तो यह आंदोलन कभी पूरे देश के किसानों का आंदोलन नहीं बन पाया। पंजाब, हरियाणा में आंदोलन का जबरदस्त प्रभाव देखने को मिला तो पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कुछ जिले ही आंदोलन से प्रभावित हुए। किसान नेता राकेश टिकैत की लखनऊ में डेरा डालने की हसरतें पूरी नहीं हो पाई। आंदोलन खत्म जरूर हो गया है, मगर किसानों की कुछ मांगें बाकी हैं, जिसमें एमएसपी की मांग प्रमुख है। जिस पर सरकार और किसान नेताओं के बीच बातचीत जारी रहेगी।

खैर अंत भला तो सब भला। आंदोलन के दौरान भले ही सरकार और आंदोलनकारियों के बीच के कई विवाद देखने को मिले हों लेकिन आंदोलन का समापन बहुत खूबसूरत तरीके से हुआ। किसान नेता, मोदी सरकार के खिलाफ किसी तरह की कोई रार लेकर नहीं गए हैं। बात राकेश टिकैत की की जाए तो वह अब मोदी सरकार का गुणगान कर रहे हैं। वह आंदोलन खत्म होने को ना अपनी जीत मान रहे हैं, ना भारत सरकार की हार। टिकैत ने कह दिया है कि उनका चुनाव से कोई वास्ता नहीं है। वह पश्चिमी यूपी में सौहार्द का वातावरण बनाने की भी कोशिश कर रहे हैं। टिकैत, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से भी मिलकर किसानों की समस्या पर चर्चा करना चाहते हैं, जिसे लोकतंत्र में किसी तरह से गलत नहीं कहा जा सकता है। किसान देश की रीढ़ की हैं। हाँ, टिकैत को इस बात का दुख जरूर है कि यूपी के किसान पंजाब और हरियाणा के किसानों की तरह आंदोलन चलाने की कुव्वत नहीं रखते हैं। भारतीय किसान यूनियन के नेता राकेश टिकैत ने अपना आगे का प्लान भी सेट कर दिया है। उनका पूरा जोर किसानों की समस्याएं सुलझाने पर रहेगा।

साल भर से अधिक समय तक चले आंदोलन के खत्म होने के बाद कैराना में हुई किसान महापंचायत में भारतीय किसान यूनियन के नेता राकेश टिकैत ने कहा कि 13 महीने के आंदोलन के बाद किसानों की बड़ी जीत हुई है। हमने भारत सरकार को नहीं हराया है। हमने अपने पंचों के समझौते को स्वीकार किया है। इस आंदोलन में ना कोई हारा और ना ही कोई जीता। उन्होंने कहा कि सरकार समझौते को लागू करने के लिए काम करे। हमें पंजाब के किसानों से व्यवस्थित आंदोलन करने की सीख लेनी चाहिए। कैराना में पानीपत बाईपास पर हुई भाकियू की महापंचायत में जब सभा स्थल कैराना को बनाने को लेकर लोगों ने सवाल खड़े किए तो टिकैत ने कहा कि इसका जवाब है कि कैराना की सीमा हरियाणा से लगी हुई है। बड़ी संख्या में किसानों से सस्ती दर पर धान–अनाज आदि खरीदकर गलत तरीके से यहीं से हरियाणा ले जाया जाता है। हम 50 कुंतल धान नहीं बेच सकते, लेकिन व्यापारी 25 से 30 हजार कुंतल बेचता है। एमएसपी की लड़ाई जारी रहेगी। इस आंदोलन ने किसानों की एकता मजबूत की। अलग–अलग भाषा और क्षेत्र के किसान साथ रहे। एक–दूसरे के विचार भी साझा किए गए। यहां भी उद्योग लगें ताकि विकास हो और रोजगार मिले। हरियाणा के किसान 35 रुपये प्रति हार्सपावर से बिल अदा करते हैं और उत्तर प्रदेश में 175 रुपये देना पड़ता है। बिजली के दाम हरियाणा के बराबर किए जाएं। उन्होंने कहा कि योगी आदित्यनाथ हरियाणा के मुख्यमंत्री से कमजोर नहीं हैं। हम दोनों में प्रतिस्पर्धा कराएंगे और लखनऊ जाकर बात करेंगे। दोनों प्रदेशों में भाजपा की सरकार है। चार हजार करोड़ रुपये गन्ना भुगतान बकाया है। यहां पर गन्ने का दाम भी कम है। किसानों पर दर्ज मुकदमों के संबंध में भी बात की जाएगी। एनजीटी के नाम पर दस साल पुराने ट्रैक्टर बंद कराने के मुद्दों पर भी बात करेंगे।

उन्होंने कहा कि कैराना में पलायन की कोई बात नहीं है। अगर है तो यह सिर्फ सरकारी प्लान है। उन्होंने लोगों से अपील की कि किसी के बहकावे में नहीं आएं और मेल–जोल के साथ रहें। हमें चुनाव से कुछ लेना देना नहीं है। सरकार के काम के हिसाब से जनता अपने आप सोचेगी। आचार संहिता लगने में अभी कुछ समय है। सरकार किसानों समेत सभी के हित में योजना बनाए। बहरहाल, किसान आंदोलन का खत्म होना जहां बीजेपी और मोदी–योगी के लिए राहत लेकर आया, वहीं विपक्ष को इससे करारा झटका लगा है जो किसानों को लुभाने के लिए इसे उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनाव में बड़ा मुद्दा बनाना चाह रहा था। यदि यूपी के विधानसभा चुनाव में राकेश टिकैत ने किसी के पक्ष या खिलाफ वोट देने की अपील किसान वोटरों से नहीं की तो इसका नुकसान रालोद–सपा गठबंधन को हो सकता है। टिकैत की बातों से लग रहा है कि वह सियासी बयान देने से परहेज करेंगे।

ग्राम सभा वीरेपुर मजरा कर्मडीह में डीएम के आदेश से एक व्यक्ति को 6 माह के लिए किया गया जिला बदर

अवध की आवाज ब्यूरो

गोंडा। थाना मोतीगंज गोंडा दिनांक 14रू12 2021 को श्रीमान जिलाधिकारी महोदय गोंडा श्री मार्कंडेय शाही के आदेश अनुसार, श्रीमान पुलिस अधीक्षक महोदय संतोष कुमार मिश्रा के निर्देश पर ,अपर पुलिस अधीक्षक शिवराज के

पर्यवेक्षण में, श्रीमान क्षेत्राधिकारी महोदय श्री संजय तलवार मनकापुर के सहयोग एवं मार्गदर्शन तथा श्रीमान प्रभारी निरीक्षक थाना मोतीगंज अरविंद कुमार के कुशल नेतृत्व में वीरेंद्र कुमार वर्मा पुत्र प्रभु नाथ वर्मा निवासी ग्राम करमडीह मौजा वीरेपुर थाना मोतीगंज जनपद गोंडा को 06 माह के लिए जिलाबदर किया गया । इस प्रकार से आप लोगों को बताते चलें कि थाना मोतीगंज के द्वारा डुग्गी मुनादी कराई गई । प्रभारी निरीक्षक थाना मोतीगंज द्वारा लोगों को अवगत कराया गया कि वीरेंद्र कुमार वर्मा पुत्र प्रभु नाथ वर्मा निर्धारित समय में जनपद गोंडा की सीमा के अंदर अगर देखे जाते हैं तो पुलिस प्रशासन को सूचित किया जाए।

सैकड़ों कृषक ने बजाज चीनी मिल पर गन्ना बेचने से किया इनकार

क्षेत्र के किसानों ने दतौली चीनी मिल को गन्ना देने की इच्छा जताई

अवध की आवाज ब्यूरो

कहोबा चौराहा गोंडा। पंडरी कृपाल ब्लाक अंतर्गत आने वाले ग्राम सभा कपीसा गांव के सैकड़ों किसानों ने सहकारी गन्ना समिति गोंडा तथा गन्ना विभाग के अधिकारियों को प्रार्थना पत्र देकर बजाज चीनी मिल द्वारा पैसा न दिए जाने की वजह से इस बार बजाज चीनी मिल पर गन्ना न बेचने का मन बना लिया है वहीं उक्त किसानों ने अपने गन्ने के सट्टा को मनकापुर दतौली चीनी मिल से करवाने की मांग की है किसानों बताया कि बजाज चीनी मिल दो–दो साल तक गन्ने का भुगतान नहीं करती है जबकि मनकापुर दतौली चीनी मिल 15 से 20 दिन में गन्ना बेचने के बाद भुगतान कर देती है कपीसा गांव के निवासी किसान कृपा राम चौधरी राघव राम पटेल साँवल साधु शरन सरजू प्रसाद शिव बक्स तरुन चंद्र तेरस लाल तिलकराम तुलसीराम उमाशंकर विमला देवी विनोद कुमार सहित सैकड़ों किसानों ने गन्ना समिति सहित गन्ना विभाग के अन्य

अधिकारियों को मांग पत्र देकर अपने–अपने गन्ने के सट्टे को बजाज चीनी मिल से हटवा कर मनकापुर दतौली चीनी मिल पर करवाने की मांग की है वही कृपा राम चौधरी ने बताया कि मेरे ही गांव के बगल पिपरा–भिटौरा में ही दतौली चीनी मिल द्वारा गन्ना क्रय केंद्र बनाया गया है जो हमारे गांव से नजदीक है इस पर हमें गन्ना बेचने में आसानी भी होगी और समय से हमारा भुगतान भी हो जाएगा बजाज चीनी मिल द्वारा समय पर पैसा न देने की वजह से हम किसानों की दयनीय स्थिति गड़बड़ होती जा रही है क्योंकि हम लोगों का गन्ना का खेती ही एक मात्र साधन था जिसे हम बेचकर अपने परिवारों का खर्च चलाते थे बजाज चीनी मिल द्वारा समय से पैसा न देने की वजह से हम लोग भुखमरी के कगार पर पहुंच गए हैं।

अवैध निर्माण ध्वस्त कर दो करोड़ रूपये से अधिक मूल्य की भूमि खाली करवाई

अवध की आवाज

लखनऊ। लखनऊ विकास प्राधिकरण उपाध्यक्ष अक्षय त्रिपाठी के आदेषानुसार अवैध अतिक्रमण के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में आज दिनांक 15.12.2021 को इण्डस्ट्रियल एरिया योजना, ऐषबाग स्थित भूखण्ड संख्या 68जी, 68सी, 68एफ, 68जे, 68के तथा 68ध्6 पर अवषेश बचे तीन अनाधिकष्त निर्माणों को ध्वस्त किया गया। विषेश कार्याधिकारी डी.के. सिंह ने बताया कि प्राधिकरण द्वारा उक्त भूखण्डों पर पूर्व में पुर्नप्रवेष की कार्यवाही की गई थी, लेकिन तत्समय मौके पर विवाद होने के कारण यह तीन अवैध निर्माण हटाये नहीं जा सके थे। उन्होंने करते हुए प्राधिकरण द्वारा उक्त भूमि पर पूर्ण रूप से कब्जा प्राप्त किया गया। उपरोक्त कार्यवाही अवर अभियंता/सहायक अभियंता तथा क्षेत्रीय

बताया कि आज कार्यवाही के दौरान वहां रहने वाले अवैध कब्जेदारों को बेदखल अमीन द्वारा की गई। उक्त भूमि का बाजार मूल्य दो करोड़ रूपये से अधिक है।

डीएम कार्यालय पहुंचकर ग्रामीणों ने कोटेदार के खिलाफ काटा हंगामा

अवध की आवाज ब्यूरो

मनकापुर गोंडा ज़िला अधिकारी मार्कंडेय शाही दिन रात मेहनत कर गरीबों का हक गरीबों तक पहुंचाने का कार्य कर रहे हैं तो दूसरी तरफ पूर्ति निरीक्षक के लापरवाही के चलते आए दिन एक ना एक मामला सामने आता रहता है। बताते चलें कि झंझरी ब्लॉक क्षेत्र के लक्ष्मणपुर जाट के रहने वाले सैकड़ों ग्रामीणों ने जिला अधिकारी कार्यालय पहुंच कर हंगामा काटा तो सिटी मजिस्ट्रेट ने जिला अधिकारी कार्यालय पहुंचकर सैकड़ों ग्रामीणों की बात को सुनते हुए उनका प्रार्थना पत्र लिया और तत्काल जिला पूर्ति अधिकारी सुरेंद्र कुमार यादव को फोन मिला कर निर्देश जारी किया कि जल्द से जल्द जांच करा कर कोटेदार के खिलाफ कार्रवाई करें उसके बाद सिटी मजिस्ट्रेट ने सैकड़ों ग्रामीणों को भरोसा दिया कि जांच होने के बाद कोटेदार मालती देवी के खिलाफ कार्रवाई होगी, ग्रामीणों के अनुसार उनको जिला पूर्ति कार्यालय बुलाया गया तो सैकड़ों ग्रामीणों ने आपूर्ति कार्यालय पहुंचकर पूर्ति निरीक्षक के समक्ष अपना बयान कोटेदार मालती देवी के खिलाफ दर्ज कराया। जानकारी देते हुए लक्ष्मनपुर जाट के सैकड़ों ग्रामीणों ने बताया कि कोटेदार मालती देवी के यहां अंगूठा लगवा लेते हैं और कई बार दौड़ते रहते हैं और राशन नहीं देते हैं कभी–कभी तो कई माह बीत जाता है उसके बावजूद भी हम लोगों को राशन नहीं देते हैं कभी कदार राशन कम और पैसा ज्यादा लेकर देते हैं।

सपा नेता अबू आसिम आजमी ने पीएम मोदी पर साधा निशाना कहा मंदिर बनाकर पुजारी बन जाएं मोदी जी

अवध की आवाज ब्यूरो

खोड़ारे गोंडा। जिले के गौरा विधानसभा में एक जनसभा को संबोधित करते हुए समाजवादी पार्टी के महाराष्ट्र प्रदेश के अध्यक्ष अबू आसिम आजमी ने मंच से ही प्रधानमंत्री मोदी पर जमकर हमला बोला है। अगले साल होने वाले चुनावी दंगल के लिए राजनैतिक पार्टियां विरोधी दलों पर जुबानी हमला करने में कोई कसर नहीं छोड़ रही हैं. इसी क्रम में गोंडा जिले के गौरा विधानसभा में सपा नेता अब्दुल कलाम मलिक के गांव राघव बस्ती में जनसभा को संबोधित करते हुए समाजवादी पार्टी के महाराष्ट्र प्रदेश अध्यक्ष अबू आसिम आजमी ने मंच से ही प्रधानमंत्री मोदी पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि गए हैं मोदी जी फिर बनारस और कॉरिडोर का ओपनिंग कर रहे हैं।अबू आजमी ने प्रधानमंत्री मोदी को सलाह देते हुए मंच से कहा, 'कि मोदी जी मेरी एक सलाह है आप को कि आप एक मंदिर बनाकर पुजारी बन जाइये। छोड़ दीजिए यह काम आप से नहीं हो पाएगा, बैठिए लेकिन यह ढोंगी काम बंद करिए आप'। देश का युवा बेरोजगारी की मार तथा देश की जनता मंहगाई की मंहगाई से कमर टूट गई है और आप लोगों को जाति–पाति और हिन्दू मुस्लिम में उलझाकर रखें हैं

महाराष्ट्र समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष और सपा विधायक अबू आसिम आजमी सपा की परिवर्तन यात्रा लेकर गोंडा के गौरा विधानसभा क्षेत्र में पंहुचे थे। जंहा उनका जगह दृ जगह स्वागत हुआ और शहर से लेकर गांव तक उन्होंने तमाम जनसभाओं को संबोधित

किया। आजमी नें शहर के कई नुक्कड़ और चौराहों पर समाजवादी पार्टी की उपलब्धियां गिनाई। वंही गौरा विधानसभा क्षेत्र में अबू आजमी भारतीय जनता पार्टी की नीतियों पर जमकर बरसे।उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी की बनाई हुई खिचड़ी भाजपाई खा रहेअबू आजमी ने भाजपा सरकार को धर्म की राजनीति करने वाली पार्टी बताया और यह भी कहा कि समाजवादी पार्टी की बनाई हुई खिचड़ी भाजपाई खा रहे हैं। मंच से उन्होंने मोदी और योगी सरकार को देश व प्रदेश को धर्म और जाति में बांटने वाली सरकार बताया। आजमी ने समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव की जमकर तारीफ की और कहा, नाकारा सरकारें ही हिंदू मुस्लिम की बात करती हैं, वो मंदिर और मस्जिद की बात करती हैं। देश में कोई भी मुस्लिम जिन्ना का समर्थक नहीं जिन्ना के मामले पर अबू आजमी ने साफ किया कि देश का बंटवारा करके जिन्ना नें हिंदू मुस्लिम एकता को खत्म कर दिया था। भारत देश में कोई भी मुस्लिम जिन्ना का समर्थक नहीं है और भाजपा एक बार फिर हिंदू मुस्लिम की बात कर सत्ता में आना चाहती हैं। समाजवादी पार्टी की तारीफ करते हुए अबू आजमी ने कहा कि समाज को लेकर सपा ने विकास किया था और जो सरकारें धर्म व मजहब के नाम पर चुनाव लड़ती हैं उनकी समाज में जगह नहीं होनी चाहिए।सपा की नीतियों से प्रभावित होकर हर पार्टी के लोग सपा में शामिल हो रहे हैं और सपा में आने की नेताओं की होड़ लगी है। परिवर्तन यात्रा लेकर गोंडा पहुंचे अबू आजमी ने कहा की इस बार समाजवादी पार्टी ही सत्ता में आएगी जनता धर्म की राजनीति करने वाले लोगों को बाहर का रास्ता दिखाएंगे। इस अवसर पर राजेश्वर मिश्रा,पूर्व चेयरमैन कमरुद्दीन, पूर्व विधायक अनवर महमूद खान, सपा जिला अध्यक्ष आनंद स्वरूप उर्फ पप्पू यादव, सपा जिला उपाध्यक्ष विजय यादव, बभनजोत तृतीय से जिला पंचायत सदस्य अमर यादव, सपा नेता अब्दुल हफीज मलिक, अब्दुल लतीफ मलिक, सपा युवा नेता नजीर मोहम्मद सपा युवा नेता मंजूर मलिक, सहित हजारों की संख्या में कार्यकर्ता रहे उपस्थित।

दुष्कर्म करने का आरोपी अभियुक्त गिरफ्तार

अवध की आवाज ब्यूरो

गोंडा। पुलिस अधीक्षक गोण्डा संतोष कुमार मिश्रा ने अपराध एंव अपराधियों के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के तहत वांछित अभियुक्तों की जल्द से जल्द गिरफ्तारी करने हेतु जनपद के समस्त प्रभारी निरीक्षक/थानाध्यक्षों को कड़े निर्देश दिए थे।

उक्त निर्देश के अनुक्रम में थाना तरबगंज पुलिस ने दुष्कर्म करने के 01 आरोपी अभियुक्त–नवीन कुमार को गिरफ्तार कर लिया गया। उक्त अभियुक्त ने अपने साथी अभियुक्तों के साथ मिलकर थाना नवाबगंज क्षेत्र की रहने वाली एक नाबालिग लड़की के साथ दुष्कर्म किया था। जिसके सम्बन्ध में पीड़िता के पिता द्वारा थाना नवाबगंज में अभियोग पंजीकृत कराया गया था।

नाबालिग लड़की के साथ दुष्कर्म करने का आरोपी अभियुक्त गिरफ्तार

अवध की आवाज ब्यूरो

कहोबा चौराहा गोंडा। पुलिस अधीक्षक गोण्डा संतोष कुमार मिश्रा ने अपराध एंव अपराधियों के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के तहत वांछित अभियुक्तों की जल्द से जल्द गिरफ्तारी करने हेतु जनपद के समस्त प्रभारी निरीक्षक/थानाध्यक्षों को कड़े निर्देश दिए थे। उक्त निर्देश के अनुक्रम में थाना नवाबगंज पुलिस ने दुष्कर्म करने के 01 आरोपी अभियुक्त–नवीन कुमार को गिरफ्तार कर लिया गया। उक्त अभियुक्त ने अपने साथी अभियुक्तों के साथ मिलकर थाना नवाबगंज क्षेत्र की रहने वाली एक नाबालिग लड़की के साथ दुष्कर्म किया था। जिसके सम्बन्ध में पीड़िता के पिता द्वारा थाना नवाबगंज में अभियोग पंजीकृत कराया गया था।

सामूहिक विवाह में कुल 28 जोड़ों का सामूहिक विवाह किया गया

अवध की आवाज ब्यूरो

खोड़ारे गोण्डा। मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह का आयोजन विधानसभा गौरा के विकास खंड बभनजोत में आयोजित किया गया जिसमें क्षेत्रीय विधायक प्रभात कुमार वर्मा बतौर मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचकर वर वधू को आशीर्वाद दिया सामूहिक विवाह में कुल 28 जोड़ों का सामूहिक विवाह किया गया जिसमें हिंदू व मुस्लिम रीति–रिवाज से विवाह संपन्न कराया गया विवाह के जोड़ों को 35 हजार नगद व 15 हजार रुपए का सामान दिया गया कार्यक्रम में मुख्य रूप से मौजूद रहे जिला समाज कल्याण अधिकारी गोंडा राजेश चौधरी,बी डी ओ बभनजोत , नीरज पटेल ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि, सोहरथ वर्मा , अजय तिवारी, पप्पू शुक्ला, सुर्य कुवर वर्मा, विक्रम प्रसाद,, सुरेंद्र तिवारी, अमेरिका वर्मा, सूर्याभान गुप्ता ,अमरनाथ पाडेय बब्लू वर्मा, कप्तान श्रीवास्तव,मधूप सिंह कमला प्रसाद, समाज कल्याण धीरेंद्र प्रताप सिंह बी डी ओ,एस.डी. बिपिन चंद्र भारती एडीओ आईएसबी रामप्रवेशक तथा भारी संख्या मे लोग मौजूद रहे।

एकअधेड़ युवक ने लंबी बीमारी के चलते यमुना नदी में लगाई छलांग मौत युवक की बाइक में मिला सुसाइड नोट

माधौगढ जालौन। जनपद जालौन के थाना कुठौंद क्षेत्र पुलिस चौकी शंकरपुर के निकट यमुना नदी शेरगढ़ घाट पर बने पुल से एक युवक ने छलांग लगा दी। जैसे ही घटना की जानकारी कुठौंद थाना अध्यक्ष रमेश चंद्र मिश्रा को हुई आनन फानन उन्होंने अपने हमराहियों सहित शंकरपुर चौकी प्रभारी राजकुमार निगम सहित घटनास्थल पर पहुंच गए। युवक ने यमुना नदी पर बने पुल पर एक मोटर बाइक को छोड़कर यमुना नदी में कूद गया। प्राप्त हुई जानकारी के अनुसार युवक का नाम अवधेश सोनी 50 वर्ष पुत्र श्री कृष्ण सोनी निवासी ग्राम वावली थाना कुठौंद जनपद जालौन है। युवक अपनी लंबी बीमारी के चलते अपने जीवन से तंग आ चुका था इसलिए उसने अपने जीवन से हार मान कर एक सुसाइड नोट बनाकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर दी और अपने पीछे पत्नी कुंती देवी 45 वर्ष तथा चार पुत्रों को छोड़कर चला गया। युवक के परिवारी जनों का रो–रो कर बुरा हाल हो गया है।वहीं जनपद जालौन की सीमा के पड़ोसी जनपद औरैया पुलिस भी मौके पर पहुंच गई। घटना विषय की जानकारी कर नवीन थाना अध्यक्ष रमेश चंद्र मिश्रा ने थाना क्षेत्र की सीमा का अवलोकन किया तो वह औरैया जनपद की सीमा में उक्त घटना को पाया गया। किंतु थाना अध्यक्ष रमेश चंद्र मिश्रा की सूझ–बूझ से चौकी इंचार्ज राज कुमार निगम अपने हमराहियों संतोष यादव, नयूम खान व विजय पाण्डेय आदि सहित मौके पर पहुंच गए ।और पड़ोसी जनपद की पुलिस की मदद में लगे हुए हैं। औरैया जनपद की पुलिस अपने कर्तव्य का कथित प्रयास कर रही है गोताखोरों की मदद से तथा नाव की सहायता से पुल से छलांग लगाने वाले युवक की तलाश की जा रही है शव की तलाश करने में पूर्णतया भागीरथी प्रयास जारी है लेकिन शव का कोई अभी तक पता नहीं चल पाया। लेकिन जनपद औरैया की पुलिस प्रशासन तथा प्रशासनिक आला अधिकारियों की यमुना नदी पुल के पास बड़ी मुस्तैदी से शव को ढूंढने का प्रयास जारी चल रहा है।

पिता की हत्या में वांक्षित चल रहे अभियुक्त को पुलिस ने गिरफ्तार कर भेजा जेल।

अवध की आवाज ब्यूरो

मनकापुर गोंडा। जनपद में अपराध एवं अपराधियो के विरूद्ध चलाए जा रहे अभियान में पुलिस अधीक्षक गोण्डा संतोष कुमार मिश्रा द्वारा जनपद के समस्त प्रभारी निरीक्षक/ थानाध्यक्ष को वांछित चल रहे अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु निर्देशित किया गया था जिसके अनुपालन में क्षेत्राधिकारी मनकापुर के निर्देशन में थानाध्यक्ष धानेपुर के नेतृत्व में थाना धानेपुर क्षेत्र के ग्राम पूरे पण्डित वृन्दावन अहिरनडीह के निवासी मृतक हीरालाल यादव पुत्र स्व. रामखेलावन यादव उम्र करीब 70 वर्ष को उनके पुत्र राम सुरेश यादव व प्रदीप यादव पुत्र गण हीरालाल यादव,नाती हरिशंकर यादव पुत्र प्रदीप कुमार यादव ,बहू बिट्टा देवी पत्नी राम सुरेश यादव,नाती नंदकिशोर यादव पुत्र राम सुरेश यादव निवासीगण पूरे पंडित वृंदावन अहिरनडीह थाना धानेपुर जनपद गोंडा द्वारा बटवारे के विवाद को लेकर हत्या कर दी थी जिसके सम्बन्ध में मृतक के छोटे बेटे पवन कुमार यादव द्वारा थाना स्थानीय पर अभियोग पंजीकृत कराया गया था, अभियोग में नामजद अभियुक्तगण घटना कारित करने के बाद से ही फरार चल रहे थे । जिसमे से प्रदीप कुमार यादव पुत्र स्व. हीरालाल यादव निवास पूरे पंडित वृंदावन अहिरनडीह थाना धानेपुर गोंडा को दिनांक 15.12.2021 को मुखबिर खास की सूचना पर ग्राम अहिरन डीह पूरे पंडित वृंदावन से गिरफ्तारी की गयी है थानाध्यक्ष शेषमणि पाण्डेय ने बताया है की अभियुक्त के विरूद्ध त्वरित कार्यवाही करते हुए दिनांक 15.12.2021 को गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय जनपद गोण्डा भेजा गया है।

कैलिया पुलिस का मानवीय चेहरा आया सामने, जलवाए अलाव

अवध की आवाज ब्यूरो

उरई, जालौन। बढ़ती ठंड अब लोगों पर भारी पड़ती जा रही है। आर्थिक रूप से सम्पन्न लोगों के पास तो इस भीषण ठंड से निपटने के तमाम साधन हैं लेकिन गरीबों और खुले में बसर करने वालों पर यह सर्दी कहर बन कर टूट रही है। ऐसे में कैलिया पुलिस का मानवीय चेहरा सामने आया है जिसने इलाके की झोपड़पट्टी में जाकर न केवल अलाव जलवाए बल्कि उन लोगों की समस्याएं भी सुनीं और उन्हें निदान कराने का भरोसा भी दिया कैलिया क्षेत्र में रिहायशी बस्ती से अलग बनाई गई झोपड़पट्टी में खानाबदोश टाइप के लोग रहते हैं जो अपने पुश्तैनी कामों के अलावा मेहनत मजदूरी करके अपने परिवारों का भरण पोषण करते हैं। उनके पास इतने साधन भी नहीं हैं कि ठंड से बचने के उपाय कर सकें, सो किसी तरह वह अपने उपलब्ध संसाधनों से ठंड से लड़ कर दिन गुजार रहे हैं। रविवार रात कैलिया थानाध्यक्ष अखिलेश द्विवेदी अपने मातहत थानेदारों और सिपाहियों के साथ जब इलाके के भ्रमण पर निकले तो झोपड़पट्टी में रह रहे लोगों की हालत देख कर उनका मन पसीज गया और उन्होंने अधीनस्थों से कह कर तत्काल वहां अलाव जलवाए। एसओ ने उन लोगों से बातचीत कर उनकी समस्याएं जानीं और शीघ्र ही उनके निराकरण कराने का भरोसा दिया। पुलिस के इस मानवीय चेहरे पर झोपड़पट्टी में रहने वाले काफी खुश दिखे।

यूपी विधानसभा का शीतकालीन सत्र आज से शुरू

लखनऊ,(वेब वार्ता)। उत्तर प्रदेश विधानसभा का तीन दिवसीय शीतकालीन सत्र बुधवार से शुरू हो रहा है। इस सत्र के दौरान, योगी आदित्यनाथ सरकार वित्तीय वर्ष 2021–22 के लिए दूसरा अनुपूरक अनुदान पेश करेगी और राज्य सरकार की विभिन्न महत्वाकांक्षी परियोजनाओं के लिए लिखित दस्तावेज मांगेगी। सूत्रों ने कहा कि चूंकि सभी दल आगामी चुनावों के लिए चुनावी प्रचार में व्यस्त हैं, इसलिए शीतकालीन सत्र संक्षिप्त होगा। यह 17वीं विधानसभा का आखिरी सत्र भी होगा। इस बीच, 2021–22 के लिए द्वितीय सप्लिमेंटरी ग्रान्ट और अगले वित्तीय वर्ष के लिए लिखित दस्तावेज की मांग गुरुवार को पेश की जाएगी। यूपी विधानसभा की व्यावसायिक सलाहकार समिति ने मौजूदा महामारी को देखते हुए सांसदों के सत्र में भाग लेने की शर्तें निर्धारित की हैं। विधानसभा ने इस बार भी अपने सदस्यों को सदन में वर्चुअल रूप से उपस्थित होने का विकल्प देने का फैसला किया है। उत्तर प्रदेश में अगले साल की शुरुआत में चुनाव होने हैं और विधानसभा के 403 सदस्यों के चुनाव के लिए फरवरी से मार्च 2022 के महीने में विधानसभा चुनाव होने की संभावना है।

एक वर्ष से अनिश्चितकालीन धरने पर बैठे पीड़ित अन्नदाता :-सुधि नहीं ले रहा शासन-प्रशासन

अवध की आवाज ब्यूरो

कहोबा चौराहा गोंडा। देश में एक तरफ जहां मोदी और योगी सरकार द्वारा किसानों की आय दोगुनी करने और उनके हितैषी होने के दावे किए जा रहे हैं वहीं उसके विपरीत धरातल पर असली तस्वीर सरकार के दावों की हकीकत बयां कर रही है।जिसका जीता जागता उदाहरण तहसील कर्नलगंज के क्षेत्र कटराबाजार अन्तर्गत ग्राम परसा गोंडरी में देखा जा सकता है। जहां बीते एक वर्ष से अनेकों किसान पुरुष एवं महिला अन्नदाता जबरन नहर खुदाई के विरोध एवं उचित मुआवजे की मांग करते हुए अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन करते हुए सर्दी,गर्मी बरसात की परवाह ना करके लगातार धरने पर डटे हैं। लेकिन इन पीड़ित किसानों धरती के भगवान कहे जाने वाले अन्नदाताओं की शासन–प्रशासन द्वारा कोई सुधि नहीं ली जा रही है। प्राप्त जानकारी के अनुसार मामला कटरा बाजार के ग्राम परसा गोंडरी के शिवशंकर पुरवा का है, यहां काफी संख्या में किसान बीते एक वर्ष से जबरन नहर खुदाई के विरोध एवं उचित मुआवजे की मांग को लेकर अनिश्चितकालीन धरने पर बैठे हुए हैं परन्तु उनकी फरियाद को कोई सुनने वाला नहीं है। वहीं जिले के जिम्मेदार प्रशासनिक अधिकारी व सिंचाई विभाग की सांठगांठ, हठधर्मिता का खामियाजा प्रभावित किसानों को भुगतना पड़ रहा है। विदित हो कि बीते दिनों केन्द्र सरकार द्वारा लागू किए जाने वाले कृषि बिल का विरोध किसानों द्वारा किया जा रहा था जिसके चलते मोदी सरकार को अपने कदम पीछे हटाते हुए तीनों कृषि बिलों को वापस लेने पर मजबूर होना पड़ा। वहीं किसानों और केन्द्र सरकार के मध्य तो समझौता हो गया, परन्तु यहां किसानों और

सिंचाई विभाग,जिम्मेदार अधिकारियों के मध्य विश्वसनीयता एवं पारदर्शिता ना होने के वजह से नहर खुदाई के लिए किसानों की भूमि को अवैध,मनमाने तरीके से अधिग्रहण किया गया, जिससे प्रभावित एवं पीड़ित किसानों ने इसकी शिकायत मुख्यमंत्री के जनसुनवाई पोर्टल सहित अन्य स्थानीय अधिकारियों से लेकर जिले व उच्चस्तरीय आला अधिकारियों से की गई। परन्तु एक वर्ष बीतने के बाद भी उक्त प्रकरण में अभी तक कोई सुनवाई नहीं हुई और जानबूझकर किसानों की अनदेखी करके जिम्मेदार शासन–प्रशासन द्वारा धरना दे रहे किसानों की फरियाद को सुनकर कोई सार्थक नतीजा किसानों के हित में नहीं निकाला जा सका। वहीं किसानों का कहना है कि वह बीते एक वर्ष से जबरन नहर खुदाई के विरोध एवं उचित मुआवजे की मांग को लेकर अनिश्चितकालीन धरने पर बैठे हुए हैं परन्तु उनकी कोई सुनने वाला नहीं है जिससे जाड़े के मौसम में बर्फीली ठण्ड में रात गुजारने के साथ ही काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। उक्त अनिश्चितकालीन धरना–प्रदर्शन में ग्राम प्रधान परसा गोंडरी वेदप्रकाश ओझा, राधेश्याम, बृजेश शुक्ल, कमलेश शुक्ल,आकाश शुक्ल,दिनेश, शुक्ल, सुषमा, शकुन्तला, शिवकुमारी, रिंकी, सुशीला सहित काफी संख्या में पुरुष एवं महिला किसान धरने पर डटे हैं।

मुफ्त राशन पाकर उपभोक्ताओं के खिले चहरे

अवध की आवाज ब्यूरो

अकबरपुर इटौरा जालौन। क्षेत्र की उचित दर दुकानों में राशन वितरण समारोह धूमधाम से मनाया गया। इस दौरान दुकानों में पहुंचे जनप्रतिनिधियों व अधिकारियों ने पात्रों को निशुल्क राशन का वितरण किया। राशन पाकर गरीब परिवारों के चेहरे खिल उठे। वितरण समारोहों के दिन प्रत्येक दुकानों में 50–50 ग्राहकों को कोविड नियमों के साथ बुलाकर खाद्यान्न दिया गया। वही भाजपा जिला महामंत्री विवेक कुशवाहा से बात हुई तो उन्होंने कहा कि कोरोना की तीसरी लहर की आशंका व्यक्त की जा रही है। केंद्र और राज्य सरकार इससे निपटने के लिए पूरी तरह तैयार है। सरकार ने लोगों आमजन को उत्तम स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध करवाई हैं फ्री में टेस्ट, फ्री में टीका और फ्री में खाद्यान्न उपलब्ध कराने के बड़े अभियान को आगे बढ़ा रहे हैं। श्री कुशवाहा ने आगे कहा कि खाद्यान्न वितरण की कार्रवाई को पारदर्शी तरीके से आगे बढ़ाया जा रहा है जबकि साल 2017 के पूर्व यही खाद्यान्न माफियाओं के पास चला जाता था और गरीब टक–टकी लगाए देखता रहता था। डबल इंजन की सरकार के डबल खाद्यान्न वितरण का लाभ हर जरूरतमंद को होली तक प्राप्त होता रहेगा। डबल इंजन की सरकार के कारण महीने में दो बार खाद्यान्न योजना का लाभ हर जरूरतमंद को प्राप्त होगा। विवेक कुशवाहा ने कहा कि हमारे शास्त्र कहते हैं कि भूखे को रोटी देना महापुण्य का कार्य है निःशुल्क खाद्यान्न वितरण महाभियान से हर जरूरतमंद को जोड़कर हम उस महापुण्य के भागीदार बने हैं। श्री कुशवाहा ने कहा कि सीएम योगी आदित्यनाथ ने रविवार को मुफ्त डबल राशन वितरण कार्यक्रम की शुरुआत कर दी है सीएम योगी आदित्यनाथ ने लखनऊ में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के अंतर्गत लाभार्थियों को निरूशुल्क राशन पैकेट देकर 'निरूशुल्क राशन वितरण महाअभियान' का शुभारंभ कर दिया है। विवेक कुशवाहा ने आगे कहा कि हमारी सरकार ने राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत मुफ्त खाद्यान्न वितरण कार्यक्रम शुरू किया है। इस योजना से देश में 80 करोड़ और यूपी में 15 करोड़ लोगों को फायदा होगा।

25,000 का पुरस्कार घोषित गैंगेस्टर, अवैध तमंचे के साथ गिरफ्तार

अवध की आवाज ब्यूरो

कहोबा चौराहा गोंडा। पुलिस अधीक्षक गोण्डा संतोष कुमार मिश्रा ने अपराध एवं अपराधियों के खिलाफ चलाये जा रहे अभियान मे वांछित/पुरस्कार घोषित अपराधियों की शीघ्र गिरफ्तारी करने के निर्देश जनपद के समस्त प्रभारी निरीक्षक/थानाध्यक्षों को दिये थे। उक्त आदेश के क्रम में थाना उमरीबेगमगंज को 01 गैंगेस्टर को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त हुई है। दिनांक 14/15.12.2021 की रात्रि थाना उमरीबेगमगंज पुलिस रात्रिगस्त/देखभाल क्षेत्र में रवाना थी कि मुखबिर खास की सूचना पर गैंगेस्टर फारूख को गिरफ्तार किया गया। गैंगेस्टर के कब्जे से 01 अदद अवैध तमंचा व 02 अदद जिन्दा कारतूस बरामद किया गया। उक्त अभियुक्त मु0अ0सं0–256/20, धारा 3(1) यू0पी0 गैंगेस्टर एक्ट थाना तरबगंज में वांछित चल रहा था जिसकी गिरफ्तारी हेतु पुलिस अधीक्षक गोण्डा द्वारा 25,000/– का पुरस्कार घोषित किया गया था।

गिरे हुए मोबाइल सहित अन्य सामान मोबाइल मालिक को किया वापस

मोबाइल व अपना सामान पाकर खुश हुआ युवक पुलिस को दिया धन्यवाद

अवध की आवाज ब्यूरो

कहोबा चौराहा गोंडा। आसपास कस्बा खरगूपुर में खरीदारी करने के दौरान रास्ते में एक रेडमी कंपनी का मोबाइल गिरा हुआ मिला,जिसके कवर के अंदर एक एटीएम कार्ड पंजाब नेशनल बैंक

व एक सिम कार्ड फ्रेंडी कंपनी सऊदी अरब व टिकट लखनऊ से दुबई, दुबई से रियाद सऊदी अरब तक का व कोविड–19 वैक्सीन कार्ड भी मिला मोबाइल लॉक होने के कारण कुछ देर बाद मोबाइल उपभोक्ता सुरेश पुत्र राम तीरथ ग्राम अयोध्या पूरवा(पूरे प्रसाद) थाना सिरसिया, जनपद श्रावस्ती द्वारा उस नंबर पर किसी दूसरे के नंबर से फोन किया गया तो फोन रिसीव होने के उपरांत फोन देने हेतु सुबह विद्युत चोरी निरोधक थाना जनपद श्रावस्ती पर बुलाकर सम्मान पूर्वक मोबाइल उपभोक्ता को मोबाइल के साथ साथ अन्य डॉक्यूमेंट दिया गया। मोबाइल उपभोक्ता सुरेश मोबाइल व अन्य डॉक्यूमेंट पाकर बहुत ही खुश हुआ और काफी पुलिस की सराहना किया उनके द्वारा बताया गया कि मोबाइल के साथ जो डॉक्यूमेंट था वह नहीं मिलता तो मुझे बहुत ही दिक्कतों का सामना करना पड़ता आप लोगों का बहुत–बहुत धन्यवाद मुझे यह विश्वास नहीं था कि मेरा मोबाइल व डॉक्यूमेंट मिल पाएगा लेकिन आप लोगों ने साबित कर दिया कि आज भी कुछ लोगों के अंदर काफी इमानदारी है मैं आप लोगों की भूरी भूरी प्रशंसा करता हूं। सराहनीय कार्य करने वाले टीम में हेड कांस्टेबल राकेश कन्नौजिया कंप्यूटर ऑपरेटर प्रदीप कुमार पांण्डेय व कांस्टेबल सरवन कुमार एंटी पावर थेफ्ट पुलिस थाना जनपद श्रावस्ती।

बच्चों को स्वच्छता के प्रति किया गया जागरूक

अवध की आवाज ब्यूरो

सिधौली–सीतापुर। इंटीग्रल विश्वविद्यालय, लखनऊ में अध्ययनरत कृषि स्नातक चतुर्थ वर्ष की छात्राओं का ग्रामीण कृषि कार्यानुभव कार्यक्रम कृषि विज्ञान केन्द्र अम्बरपुर, सीतापुर के मार्गदर्शन में संचालित है। जिसके अन्तर्गत केन्द्र द्वारा ज्ञानवी तिवारी के नेतृत्व में 8 छात्राओं के समूह को सिधौली विकास खण्ड का टिकौली गांव आवंटित किया गया था। छात्राओं ने केन्द्र के मार्गदर्शन में ग्राम पंचायत के आधारभूत आंकड़ों आदि का संकलन किया, खेती – किसानी की परिस्थितियों, किसानों की समस्याओं आदि का ग्रामवासियों के सहयोग से विधिवत अध्ययन किया एवं किसानों को तकनीकी जानकारी उपलब्ध कराने एवं उनकी जिज्ञासाओं का समाधान करने के उद्देश्य से एक किसान गोष्ठी का भी आयोजन किया गया तथा बच्चों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने हेतु प्राथमिक विद्यालय टिकौली पर एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमे चार्ट, पैंपलेट, पपेट शो का भी प्रयोग किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत में आफरीन फातिमा ने कार्यक्रम में आए हुए अतिथियों का स्वागत किया एवं स्वच्छता के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम में विभिन्न माध्यमों से कविता पाण्डेय ने गलत स्थान पर थूकने से होने दुष्परिणाम एवं इसके समाधान के बारे में जानकारी प्रस्तुत की, भावना चौधरी ने सूखे एवं गीले कूड़े की पहचान एवं कूड़ेदान में डालने का तरीका तथा इनके प्रबंधन पर जानकारी प्रदान की, यशी गुप्ता एवं शिवा तिवारी ने बच्चों को प्रातः उठने एवं उसके बाद नित्य क्रिया करने मैं साफ सफाई का तरीका तथा स्कूल में किस प्रकार से स्वच्छता रखें पर बच्चों को

जागरूक किया, आयुषी सिंह ने शारीरिक स्वच्छता के तरीके पर जागरूक किया, साक्षी शुक्ला ने कविता के माध्यम से दांतो की साफ सफाई के सही तरीके की जानकारी दी। तत्पश्चात आठों छात्राओं के समूह ने नुक्कड़ नाटक के माध्यम से हाथों की सफाई करने के सही तरीके के बारे में बच्चों को जानकारी प्रदान की तथा समूह की लीडर ज्ञानवी तिवारी ने पपेट शो के माध्यम से स्वच्छता के दुष्परिणाम एवं साफ सफाई रखने के फायदे के बारे में जागरूक किया।

प्राथमिक विद्यालय में कक्षा 1 से लेकर 5 तक में पढ़ने वाले प्यारे बच्चों ने भी स्वच्छता से संबन्धित एवं अन्य कविता की प्रस्तुति दी तथा बच्चों को छात्राओं ने गिफ्ट भी दिया।

प्राथमिक विद्यालय टिकौली के प्रधानाचार्य अशोक यादव ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए स्वच्छता का मानव जीवन में महत्व पर प्रकाश डाला तथा छात्राओं द्वारा किए गए जागरूकता कार्यक्रम की सराहना एवं उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। ग्राम प्रधान अखिलेश कुमार ने साफ सफाई पर चर्चा करते हुए छात्राओं द्वारा गांव में किए गए विभिन्न कार्यक्रमों जैसे आधारभूत आंकड़ों के संकलन, खेती किसानी की जानकारी, किसानों को जागरूक करने के लिए गोष्टी का आयोजन एवं स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम की प्रशंसा की साथ ही साथ उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक डॉ विनोद कुमार सिंह ने इंटीग्रल विश्वविद्यालय छात्राओं का परिचय कराते हुए ग्रामीण कार्यानुभव कार्यक्रम में उनके द्वारा किए गए कार्यों के बारे में जानकारी प्रदान की तथा छात्राओं द्वारा किए गए समस्त कार्यक्रमों की सराहना की। डॉ सिंह ने अपने संबोधन में प्यारे प्यारे बच्चों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करते हुए कहा कि यदि आप लोग साफ सफाई का अच्छे तरीके से पालन करेंगे, पौष्टिक एवं संतुलित आहार का सेवन करेंगे, माता – पिता एवं गुरुजनों का की बात का पालन करेंगे एवं अच्छी प्रकार से शिक्षा ग्रहण करेंगे तो अवश्य ही आप लोग अच्छे इंसान बनेंगे एवं अपने परिवार का, अपने गांव का अपने देश का नाम रोशन करेंगे। आप लोग स्वच्छता के प्रति खुद भी जागरूक हो तथा अपने आस–पास रहने वाले लोगों को भी जागरूक करें जिससे हमारे आस–पास साफ सफाई हो एवं किसी प्रकार की बीमारियों का सामना ना करना पड़े। कार्यक्रम के अंत में आफरीन फातिमा ने समस्त आगन्तुकों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

हजारों की संख्या में प्रधान व पंचायत सहायक लखनऊ रवाना,बढ़ सकता है प्रधान मानदेय

अवध की आवाज ब्यूरो

कहोबा चौराहा गोण्डा। उत्तर प्रदेश सरकार के आवाह पर ग्राम पंचायत सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिये जिले से हजारों प्रधान व पंचायत सहायक आज विभिन्न ब्लाक मुख्यालयों से सुबह राजधानी लखनऊ के लिये रवाना हो गये। बता दें कि उक्त के संदर्भ में मनोज कुमार सिंह अपर मुख्य सचिव पँचायती राज उत्तर प्रदेश शासन द्वारा पत्रांक संख्या 2382/33–3–2021दिनांक 11 दिसम्बर 2021 को प्रदेश के समस्त जिला अधिकारी सहित अन्य को पत्र भेजकर 15 दिसम्बर को लखनऊ स्थित रमा बाई अम्बेडकर मैदान में आहूत ग्राम पंचायत सम्मेलन में प्रतिभाग व प्रदेश की 58189 ग्राम पंचायत सचिवालय के शुभारंभ हेतु आमंत्रित किया गया था। उक्त सम्मेलन में हिस्सा लेने हलधरमऊ, कर्नलगंज, परसपुर, कटराबाजार सहित समस्त विकासखंड मुख्यालय से नामित प्रभारियों व सह प्रभारियों के साथ बसों में बैठकर रवाना हुए। वहीं आगामी 2022 के चुनाव को देखते हुए उम्मीद है कि प्रधान के मानदेय में बढ़ोत्तरी की घोषणा की जा सकती है।

विकासखंड मुझेहना, शिक्षा क्षेत्र मुजेहना के प्राथमिक विद्यालय बेशुपुर में सोबिस्को कंपनी द्वारा बच्चों को वितरण किया गया बिस्कुट और टॉफी

अवध की आवाज ब्यूरो

गोंडा। प्राथमिक विद्यालय बेशुपुर मे सोविस्को कंपनी द्वारा रीजनल मैनेजर आदिल के निर्देशानुसार ट्रेटीरी इंचार्ज तिलकराम मिश्रा के द्वारा स्कूली बच्चों को विस्कोट, टॉफियां बांटी गई। इस प्रकार से आप लोगों को बताते चलें कि इस तरह से बड़ी–बड़ी कंपनियां क्षेत्र में भ्रमर करके विद्यालयों में जाकर के छोटे बच्चों को टॉफी बिस्कुट दे कर के उनका उत्साहवर्धन करते हैं और बच्चों को कुछ कर गुजरने का पाठ पढ़ाते हैं जिस तरह से इस मौके पर ग्राम सभा के प्रतिष्ठित व्यक्ति लोग भी उपस्थित थे और मुख्य रूप से प्रधानाध्यापक राधेश्याम, सहायक अध्यापक राहुल , पवन, राम सिंगार आदि लोग मौजूद रहे।

थाना मितौली पुलिस द्वारा, 01 किलो 300 ग्राम अवैध गांजा बरामद कर अभियुक्त अजय पुत्र हरद्वारी को गिरफ्तार किया गया

अवध की आवाज ब्यूरो

लखीमपुर खीरी। पुलिस अधीक्षक खीरी, संजीव सुमन के निर्देशन एवं अपर पुलिस अधीक्षक के निकट पर्यवेक्षण में सम्पूर्ण जनपद में अवैध मादक पदार्थों के निर्माण, बिक्री व परिवहन के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के अन्तर्गत दिनांक 15.12.2021 को थाना मितौली पुलिस द्वारा अभियुक्त अजय पुत्र हरद्वारी निवासी ग्राम वजीरपुर थाना मितौली जनपद खीरी को गिरफ्तार करके उसके कब्जे से 01 किलो 300 ग्राम अवैध गांजा बरामद किया गया, जिसके संबंध में थाना मितौली पर मु0अ0सं0 456/21 धारा 8/20 एनडीपीएस एक्ट पंजीकृत कर अभियुक्त को माननीय न्यायालय भेजा गया।

शिक्षक भर्ती में हुए आरक्षण से संबंधित घोटाले की पुष्टी के बाद भी सरकार मौन – रंजीत यादव

अवध की आवज अर्पिता

लखनऊ। प्रगतिशील समाजवादी पार्टी लोहिया के लखनऊ जिलाध्यक्ष एवं प्रत्याशी 169 बख्शी का तालाब विधानसभा श्री रंजीत यादव ने प्रसपा प्रदेश कार्यालय में आयोजित बैठक में मीडिया से बातचीत में 69000 शिक्षक भर्ती में आरक्षित वर्ग के पिछड़े एवं दलित अभ्यर्थियों के हकमारी पर गहरा रोष प्रकट किया। उन्होंने इसके लिए डबल इंजन की सरकार को जिम्मेदार मानते हुए सरकार से पूछा कि आखिर क्या कारण है कि राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग द्वारा शिक्षक भर्ती में हुए आरक्षण से संबंधित घोटाले की पुष्टी के बाद भी सरकार मौन है। उत्तर प्रदेश में युवाओं के साथ अन्याय हो रहा है।पारदर्शी, निष्पक्ष, शुचितापूर्ण परीक्षा कराना असंभव हो गया है। युवाओं को सरकारी नौकरी की तैयारी से लेकर मुकदमेबाजी

के लिए बाध्य होना पड़ रहा है।लगभग छः महीने से 69000 शिक्षक अभ्यर्थी आंदोलनरत हैं। अपने हक की आवाज उठाने पर उनपर बर्बर लाठीचार्ज किया जा रहा है।प्रसपा सरकार से अपील करती है कि 69000 शिक्षक अभ्यर्थियों की मांगों को तत्काल लागू किया जाए, साथ ही भर्ती में हुए घोटाले की निष्पक्ष जांच कर दोषियों के विरुद्ध कानून सम्मत कार्रवाई की जाए।

अवध की आवाज हिन्दी दैनिक, प्रकाशक ,मुद्रक व स्वामी,अनिल कुमार सिंह द्वारा स्काई लाइन प्रिन्टर्स,119/23 खन्दारी लेन, लालबाग, लखनऊ उ0प्र0 से मुद्रित तथा डी–97/3 व 7,सेक्टर–7, इन्दिरा नगर,लखनऊ,उ0प्र0 से प्रकाशित। सम्पादक अनिल कुमार सिंह फोन : 0522–4340954 मो0–7905407289, Email: avadhkiaawaz@gmail.com
R.N.I.- UPHIN/2012/45127
नोट : समाचार पत्र से सम्बंधित सारे विवादोंका न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा।